

राजभाषा अंकुर

नियमित योग कीजिए
जिंदगी भर रोग से दूर रहिए



पानी बचाएं

आपके विश्वास की नींव के साथ हम दृढ़ता से आगे बढ़ें हैं
इस दिवस पर हम राष्ट्र की सेवा में स्वयं को पुनः समर्पित करते हैं



बैंक ने हॉल बाजार अमृतसर (भवन का रेखाचित्र) से वर्ष 1908 में अपनी यात्रा प्रारंभ की

ਪੰਜਾਬ ਐਂਡ ਸਿੰਧ ਬੈਂਕ

(भारत सरकार का उपक्रम)



Punjab & Sind Bank

(A Govt. of India Undertaking)

Where service is a way of life

आने वाली
पीढ़ी के
लिए पर्यावरण
बचाएं



ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫਤਹ ॥



पी.एस.बी

ਪੰਜਾਬ ਐਂਡ ਸਿੰਧ ਬੈਂਕ
Punjab & Sind Bank
ਪੰਜਾਬ ਐਂਡ ਸਿੰਧ ਬੈਂਕ

(भारत सरकार का उपक्रम / A Govt. of India Undertaking)

(राजभाषा विभाग)



बैंक द्वारा “बैंकिंग आपके द्वार” योजना का शुभारम्भ किया गया है जिससे संबंधित पच्ची बैंक के सभी एटीएम में उपलब्ध होगी। शाखा राजेन्द्र प्लेस के एटीएम में इस योजना का उद्घाटन करते हुए बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एस. हरिशंकर जी, साथ है बैंक के कार्यकारी निदेशक डॉ फरीद अहमद जी, आंचलिक कार्यालय नारायणा के आंचलिक प्रबंधक श्री गोपाल कृष्ण तथा शाखा राजेन्द्र प्लेस के प्रभारी श्री अशोक कुमार।



बैंक द्वारा बैंक शाखाओं के वरिष्ठ महत्वपूर्ण ग्राहकों को सम्मानित करने की योजना आरंभ की गई है। बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एस. हरिशंकर जी शाखा राजेन्द्र प्लेस के वरिष्ठ महत्वपूर्ण ग्राहक को शाल उढ़ाकर सम्मान करते हुए।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
प्रधान कार्यालय राजभाषा की हिंदी प्रतिका

राजभाषा अंकुर

(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

'बैंक हाउस' प्रथम तल, 21, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली-110 125



अप्रैल-जून, 2019

मुख्य संरक्षक

एस. हरिशंकर
प्रबंध निदेशक एवं
मुख्य कार्यकारी अधिकारी

संरक्षक

डॉ. फरीद अहमद
कार्यकारी निदेशक

श्री गोविन्द एन डोंग्रे
कार्यकारी निदेशक

मुख्य संपादक

श्री संजीव श्रीवास्तव
उप महाप्रबंधक सह
मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक एवं प्रकाशक

श्री राजीव कुमार राय
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल

डॉ. नीरू पाठक
प्रबंधक
कौशलेन्द्र कुमार
राजभाषा अधिकारी

ई-मेल : hindipatrika@psb.co.in

पंजीकरण सं.: एफ. 2(25) प्रैस. 91

(पत्रिका प्रकाशन तिथि : 20/07/2019)

'राजभाषा अंकुर' में प्रकाशित सामग्री में दिए गए विचार, संबंधित लेखकों के अपने हैं। पंजाब एण्ड सिंध बैंक का प्रकाशित विचारों से सहमत होना ज़रूरी नहीं है। सामग्री की मौलिक एवं कॉपी राइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं।

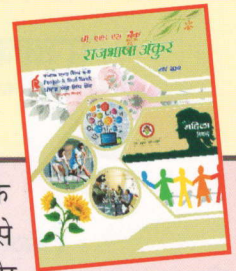
मुद्रक : सुधीर प्रिन्टर्स

151, देशबंधु गुप्ता मार्केट,
करोल बाग, नई दिल्ली - 110005
फोन: 011-23522683, मो. 9810334493
ई-मेल: sudhirprinters1971@gmail.com

विषय-सूची

क्र. सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	संपादक मंडल/विषय सूची	1
2.	आपकी कलम से	2
3.	संपादकीय	3
4.	बैंक का स्थापना दिवस	4-5
5.	लंबी सीटी देकर जब गाड़ी खुलने वाली थी	6-7
6.	नराकास उपलब्धियाँ	8-9
7.	सिक्के पे सिक्का	10
8.	विविध समाचार	11
9.	राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर	12-15
10.	निंदक नियरे राखिए (ओड़िया लेख हिंदी रूपांतर सहित)	16-19
11.	प्रधान कार्यालय में स्थापना दिवस	20-21
12.	गुरु अरजन देव जी का शहीदी गुरूपर्व	22-23
13.	कार्टून कोना/ज़रा सोचिए	24
14.	नकदी रहित अर्थव्यवस्था.....	25-27
15.	योग के दार्शनिक एवं सांस्कृतिक महत्व	28-32
16.	वार्षिक कार्यक्रम	33
17.	काव्य-मंजूषा	34-35
18.	विरासत	36-37
19.	उत्तराखंड सांस्कृतिक एवं भौगोलिक परिवेश	38-39
20.	ग्राहक के मुख से	40
21.	हिंदी/पंजाबी कार्यशाला	41
22.	पर्यावरण बचाओ	42-43
23.	आपकी कलम से....	44

आपकी कलम से



पत्रिका की साज-सज्जा और पत्रिका में शामिल फोटो गतिविधियां बेहतरीन हैं। पत्रिका में शामिल आलेखों से स्टाफ सदस्यों को बैंकिंग और अर्थव्यवस्था के विषय जैसे भारत के बढ़ते कदम, डिजिटल भारत और भविष्य निधि से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराई गई है। इसके साथ ही पत्रिका में कुंभ मेला, महिला सशक्तिकरण और उगादि त्यौहार जैसे अन्य विषयों पर आलेख भी वाचकों के लिए पठनीय हैं।

पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादकीय टीम को शुभकामनाएं।

डॉ. जवाहर कर्नावट

महाप्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा

आदरणीय संपादक महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित पत्रिका का मार्च 2019 अंक मिला, आभार! यद्यपि पत्रिका के सभी अंक संग्रहणीय हैं परंतु नवीनतम अंक के बहुतायत लेख बेहद जानकारी परख हैं। श्री गोपाल कृष्ण का “नारी सशक्तिकरण” लेख तकनीकी पहलुओं को छूता है, 19 वीं सदी से 21 वीं शताब्दी तक का लेखा-जोखा है। डॉ. नीरू पाठक की अनुवादित तेलगुभाषी रचना मूल लेखन के बराबर की है, डॉ. साहिबा की मेहनत व दूरदर्शिता स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है।

काव्य-मंजूषा में समाहित कविताएं मन को छूती हैं। “ऋतु का आगमन” की लेखिका को बधाई एवं साधुवाद। शिखा श्री का लेख भविष्य निधि विभाग के कार्यकलापों पर विस्तृत व जानकारीपरख सामग्री जुटाने के लिए लेखिका को बधाई व शुभकामनाएं। डिजिटल भारत अभियान में समाहित मुद्दों को उठाने में लेखक पूर्णतः सफल रहा है। सुमन कुमार के लेख ने मन प्रफुल्लता से भर दिया।

अधिक अच्छा होता यदि छायाचित्रों के पृष्ठों पर सहभागियों के नाम, विभाग का नाम होता।

कुल मिलाकर यह अंक सदैव स्मरणीय रहेगा। पत्रिका की दिन-दूनी रात चौगुनी तरक्की के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

डॉ. चरनजीत सिंह

सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

महोदय, मुझे राजभाषा अंकुर का दिसंबर 2018 का अंक प्राप्त हुआ। राजभाषा अंकुर पत्रिका अंक दर अंक तकनीकी व विभिन्न रुचिकर विषयवार लेख सामग्री और छायाचित्रों के बेहतर संकलन से सुसज्जित होती जा रही है। पत्रिका में कुछ लेखकों ने ऐसी कविताएं लिखी हैं जो जीवन की वास्तविकता का परिचय कराती हैं जैसे-डिजिटल बैंकिंग, गौरव के क्षण, स्वच्छ समाज उन्नत समाज। साथ ही विभिन्न लेख जो कि बैंकिंग संबंधी अति आवश्यक जानकारी प्रदान करते हैं उनमें से मैंने सर्वप्रथम अपने बैंक के इतिहास को पढ़ा इसके बाद मेरी अन्य ज्ञानवर्धक विषयों को भी पढ़ने की उत्सुकता जागी जैसे-बैंकिंग में राजभाषा का महत्व को पढ़कर अच्छा लगा। पत्रिका को पढ़ते समय मैंने प्रत्येक पन्ने के नीचे दिए गए रुचिकर उद्धरण व संदेश भी देखे जो की समाज और जीवन की नैतिकता सिखाते हैं। वास्तव में हमारी राजभाषा अंकुर अत्यंत रुचिकर होती जा रही है। इसके लिए प्रधान कार्यालय के राजभाषा विभाग का प्रत्येक सदस्य बधाई का पात्र है। मेरी तरफ से राजभाषा विभाग की टीम को मंगलकामनाएं। मैं आप सभी(राजभाषा टीम) के माध्यम से राजभाषा अंकुर के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

जय हिन्द !!!

विजय कुमार निरंजन,
आंचलिक प्रबंधक, बरेली



रूप में
विकास यात्रा के

साथियो,

बैंक द्वारा उठाए गए विभिन्न सकारात्मक कदमों तथा आप सबके सतत् प्रयासों से आज के कठिन आर्थिक दौर में भी बैंक ने अपनी उपलब्धियां दर्ज की हैं। 'राजभाषा अंकुर' पत्रिका भी आंतरिक संचारक के अपने सभी रचनाकारों के सहयोग से राजभाषा हिंदी के विकास के साथ बैंक की महत्वपूर्ण सोपानों को संजोए अपना सहयोग देने में सदैव तत्पर रही है।

बैंक समाज के प्रति संवेदनशील संस्थाएं हैं और पत्रिकाएं इस संवेदनशीलता को बड़ी ही शालीनता से अपने पाठकों तक पहुँचाने का काम करती हैं। संपूर्ण विश्व ग्लोबल वार्मिंग और प्रदूषण की समस्या से जूझ रहा है, हमारे देश में भी पानी की कमी और सूखे जैसी समस्या विकराल रूप धारण कर चुकी हैं। इस अंक में सूत्रवाक्य पानी और प्रकृति के प्रति मनुष्य की संवेदनहीनता को दर्शाने का प्रयास कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त पर्यावरण बचाओ और आँचलिक कथाकार श्री फणिश्वर नाथ रेणु से साक्षात्कार भी इस अंक की विशेषता है। जिस प्रकार साहित्य समाज का आईना होता है उसी प्रकार पत्रिका भी, किसी संस्था विशेष की समग्र रूप में झलक दिखलाती है। हमारी पत्रिका भी इसी विशेषता को संजोए न केवल विविध साहित्यिक विधाओं बल्कि बैंक की विभिन्न गतिविधियों से भी हम सभी को रू-ब-रू कराती है। 24 जून को बैंक का 112 वाँ स्थापना दिवस प्रधान कार्यालय, सभी आँचलिक कार्यालयों और शाखाओं में जोर-शोर से मनाया गया, जिसकी प्रस्तुति इस अंक में समाहित है। प्रस्तुत अंक में प्रादेशिक भाषा की श्रृंखला में उड़िया भाषा में "हिंदी अनुवाद सहित" लेख प्रकाशित किया गया है। पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास के लिए आप सभी की भागीदारी आवश्यक है।

आशा है बैंक में हिंदी के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य को लेकर चल रही 'राजभाषा अंकुर' का यह अंक भी आपको पसंद आएगा। पत्रिका आपको कैसी लगी, कृपया हमें अपनी प्रतिक्रिया से अवश्य अवगत कराएं जिससे कि पत्रिका को और सुरुचिपूर्ण बनाया जा सके।

संजीव श्रीवास्तव

उप महाप्रबंधक

सह मुख्य राजभाषा अधिकारी

पवित्र नगरी अमृतसर में बैंक के 112वें स्थापना दिवस का भव्य आयोजन किया गया। जिसमें अखंड पाठ साहिब, अधिकारी श्री एस. हरिशंकर जी, कार्यकारी निदेशक श्री गोविंद एन डोंग्रे जी, बोर्ड के सदस्य श्री विजेन्द्र जी, श्री हर्षवीर



ਰਕਤਦਾਨ ਸ਼ਿਵਿਰ ਤਥਾ ਸਾਂਸਕ੍ਰਿਤਿਕ ਕਾਰਜਕ੍ਰਮ ਦਾ ਆਯੋਜਨ ਕੀਯਾ ਗਯਾ। ਇਨ ਕਾਰਜਕ੍ਰਮਾਂ ਮੇਂ ਬੈਂਕ ਦੇ ਪ੍ਰਬੰਧ ਨਿਵੇਸ਼ਕ ਏਵੰ ਮੁਖਯ ਕਾਰਜਕਾਰੀ ਜੀ ਤਥਾ ਬੈਂਕ ਦੇ ਅਨਯ ਉਚਾਧਿਕਾਰੀਯੋਂ ਦੇ ਸਾਥ ਬੈਂਕ ਦੇ ਸਟਾਫ ਨੇ ਭਾਗ ਲੀਯਾ। ਪ੍ਰਸ਼੍ਤੁਤ ਹੈ ਕਾਰਜਕ੍ਰਮਾਂ ਕੀ ਝਲਕੀਯਾਂ



लम्बी सीटी देकर जब गाड़ी खुलने वाली थी।

जीवन के कुछेक अविस्मरणीय क्षण जिसमें उपलब्धियों का स्वाद घुला हो, व्यक्ति की धरोहर ही तो होता है। इस धरोहर का कोई मूर्त रूप तो नहीं होता लेकिन उसकी याद मन को स्पंदित करती है। हृदय यही चाहता है कि इस प्रकार की यादों में डूबे रहे तो जीवन की अधिकांश समस्याएं नेपथ्य में चली जाएगी। विशेष तौर पर किसी संत, साहित्यकार या अपने क्षेत्र के मूर्धन्य व्यक्ति के साथ बिताए गए क्षण ऐसे ही स्वादपरक होते हैं।

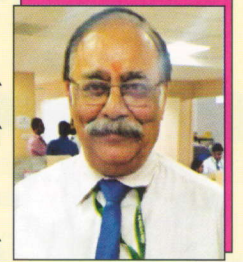
महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा हिंदी संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा था। संगोष्ठी के संपूर्ण आयोजन का एक महत्वपूर्ण दायित्व मुझे और मेरे एक सहपाठी को सौंपा गया कि हिंदी के मूर्धन्य साहित्यकार, आंचलिक कथाकार श्री रेणु जी को इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित करना है। दायित्व इतना सौभाग्यवर्धक था कि हमने अगले ही दिन रेणु जी के पैतृक ग्राम सिमरहा जाने की तैयारी कर ली। भारत के जिन लोगों को साहित्य में थोड़ी बहुत रुचि है वे बिहार के पूर्णिया जिले से अच्छी तरह परिचित होंगे। इसी पूर्णिया जिले का एक गाँव है सिमरहा। विधाता ने इसी गाँव को यह गर्व दिया कि वह रेणु जी की कर्मभूमि बने। केवल लेखन में ही नहीं वरन आंचलिकता रेणु जी के

रहन-सहन, आचार-विचार, बोलचाल, मनोभाव और पहनावा में सहज ही परिलक्षित होती थी। अपने आंचलिक भाषा-प्रेम का वर्णन करते हुए किसी बैठक में रेणु जी ने स्वयं बताया था कि हिंदी साहित्य जगत में थोड़ी-बहुत पहचान बनाने के बावजूद उन्हें अपने नाम का आंचलिक स्वरूप ही अपेक्षाकृत प्रिय और अपनापन लिए लगता है; जब कभी सिमरहा स्टेशन से कहीं जाने के लिए वे टिरेन (रेलगाड़ी) पकड़ने में थोड़ा देर हो जाते थे तो लोग उन्हें 'रेणु जी' कहकर नहीं बल्कि 'फणीशरा' कहकर पुकारते थे जो उन्हें आनंदित कर देता था और उसी प्रेमभाव के

लिए उन्होंने कुछ पंक्तियाँ भी कही :

“लंबी सीटी देकर जब गाड़ी खुलने वाली थी, अरे फणीशरा सुनकर मेरी जान निकलने वाली थी।”

महाविद्यालय फारबीसगंज में था जिसका उल्लेख आपको

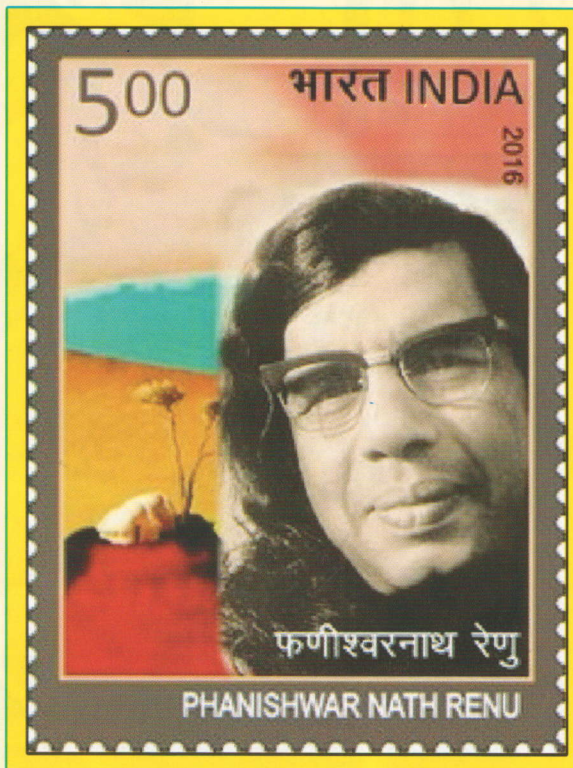


वी. एस. मिश्रा

मैला आँचल के सुनहरे पृष्ठों पर मिल जाएगा, यहाँ से रेलगाड़ी से आधे घण्टे में सिमरहा स्टेशन पहुँचने के बाद बताया गया कि आधे कोस की दूरी पर इस मनीषी साहित्यकार का पैतृक निवास है। गर्मी के दिन में गला सूखना स्वाभाविक था लेकिन पाँव उत्साह से भरे थे, मन में उमंगें और उद्वेग का इतना उथल-पुथल था कि मार्तण्ड की प्रचण्ड किरणें भी मार्ग बाधित करने में असमर्थ थीं। हमने पगडंडियों के रास्ते इस यात्रा को प्रारंभ किया। सिमरहा स्टेशन और हमारे गंतव्य के रास्ते में कोई 50 से 60 खेत आए जिनमें काम करते हुए अधनंगे मजदूरों को देखकर अनुभव हुआ कि इन्हीं मजदूरों के ललाट पर पसीने और स्वाभिमान को देखकर रेणु जी ने 'रसपिरिया' और 'सिरचन' जैसे पात्र गढ़े होंगे। कथाओं

और गल्पों में मानव मन और परिवेश विशेष का चित्रांकन कलम की विशेषता होती है लेकिन पाठक के भाव में उतरकर उसके हृदय सागर में स्थायी रूप से अंकित हो जाना कलमकार की संजीदगी होती है।

खेतों को पार करने के उपरांत एक सामान्य एक मंजिला मकान जिसका आधा हिस्सा पक्का और आधा हिस्सा खपरैल से आच्छादित था, के सामने हम खड़े थे। घर सामान्य था किंतु घर से प्रवाहित होने वाली ऊर्जा अति असामान्य थी। घर के समक्ष विभिन्न पुष्प, क्यारियाँ और उनके मध्य एक स्वच्छ मार्ग था जो



घर के द्वार तक पहुंचता था। बरामदे में लकड़ी के दो बेंच और एक दो आराम कुर्सियाँ पड़ी थीं; हमारे मन में वह कल्पना आई कि इन्हीं आराम कुर्सियों पर बैठकर साहित्य शिरोमणि विद्वतजनों से चर्चा करते होंगे या फिर अड़ोसी-पड़ोसी ग्रामीणों से उनकी ही भाषा में उनके सुख-दुख को समझकर साहित्य के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने के लिए विचार मग्न होते होंगे। इसी कुर्सी पर मैला आँचल, परती-परिकथा, मारे गए गुलफाम और ठेस जैसी श्रेष्ठ कृतियों का ताना-बाना बुना होगा। इसी पवित्र भूमि पर वह साहित्य का निर्झर फूटा होगा। स्वतः हम दोनों छात्रों के हाथ धरती माता के इस अंश को स्पर्श और प्रणाम करने के लिए बढ़े। अभी हमारे मन का उद्वेग शांत भी नहीं हुआ था कि ग्रामीण पोशाक में एक व्यक्ति ठंडे जल के साथ दो बड़े-बड़े ग्लास रख गया। उनका यह कथन कि “रेणु जी अभी अपने कक्ष में है और आने का प्रयोजन पूछा है” हमें अच्छा लगा। हमने बताया कि हम स्थानीय महाविद्यालय के छात्र हैं और हिंदी संगोष्ठी के लिए रेणु जी को आमंत्रित करने आए हैं। वे हमें बैठाकर सूचना देने के लिए अन्दर गए।

दसक मिनट हुए होंगे कि दरवाजा खुला और बहुत ढीले पजामें, ढीला कुर्ता, दैदीप्यमान चेहरा, बड़े-बड़े बाल लेकर प्रकट हुए; यही थे रेणु जी। दो अदने छात्रों से सीधे-सीधे मिलने आना और दोनों के कंधे दबाकर उन्हें बैठने के लिए कहना इतना अविस्मरणीय अनुभव है कि आज भी मन रोमांच से भर जाता है और उनका पहला प्रश्न देखिए कि “तुम लोगों ने कुछ खाया है कि नहीं।” भोजन की आवश्यकता हो या शरीर की क्लान्ति, पेशानी के स्वेद कण, पैरों की थकान सब छूमंतर हो गए। हम जड़वत थे, उस विशाल व्यक्तित्व के पीछे हिंदी साहित्य की जगमगाहट ने हमें अभिभूत कर रखा था। उन्होंने आने का प्रयोजन पूछा और हमने लड़खड़ाते, अस्फुट ध्वनि में कार्यक्रम और अपने प्राचार्य के आमंत्रण के विषय में बताया। हिंदी साहित्य जगत और भारतवर्ष को आँचलिक विशेषताओं से परिचित कराने वाली लेखनी को पकड़ने वाले अपने हाथों से हमारे पीठ पर करीब-करीब धौल जमाते हुए कहा कि इतनी गर्मी में, इतनी थकान सहकर जो मुझे आमंत्रित करने आए हो और वह भी माँ हिंदी की सेवा के लिए तो मैं अस्वीकार कैसे कर सकता हूँ लेकिन मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं चल रहा है और इस समय मैं उदर व्यथा से उद्धिग्न हूँ। हाँ यदि यह समस्या आगे भी जारी नहीं रही तो मैं जरूर आऊंगा और अंदर से मंगाकर उन्होंने अपनी कहानी

संग्रह की दो प्रतियाँ हमें स्वहस्ताक्षर से भेंट की। उनकी भेंट की गई किताब यदि आज मेरे पास होती तो मैं अपने इस लेख के साथ उसका हस्ताक्षरित पृष्ठ भी प्रकाशन के लिए उपलब्ध कराता और वह मेरे लिए विरासत का बहुत बड़ा हिस्सा होता लेकिन अपने हिस्से की एक किताब मैंने महाविद्यालय के पुस्तकालय में रखवा दी और मेरे मित्र ने अपने हिस्से की प्रति अपने पास रख ली।

स्वास्थ्य की बात करके उनका कंठ थोड़ा अवरुद्ध होने लगा, चेहरे पर अस्वस्थता के लक्षण उभर आए और उन्होंने हमसे क्षमा याचना करते हुए विश्राम की अनुमति चाही। हमारे लिए यह ऐसा अवसर था जो अपनी स्मृति में न चाहते हुए भी संजोए हुए वापस लौटने लगे। अपने लेखों से आँचलिक उपन्यासकार का दर्जा पाने वाले के व्यक्तित्व में आतिथ्य भाव का रहना स्वाभाविक था, उन्होंने ऐसे ही तो समाज के निम्न तबके की छोटी से छोटी परम्पराओं का गुणगान नहीं किया होगा। वापस लौटने ही वाले थे तभी दो प्लेटों में दही-चूड़ा, गुड़, हरी मिर्च और कुछ अचार हमारे लिए प्रस्तुत किया गया। परोसे गए क्षेत्रीय व्यंजन में भाव कुछ ऐसा था, हम निश्चित नहीं कर पा रहे थे कि यह गुड़ की मधुरिमा थी या ऐसे युग पुरुष से मिलने का माधुर्य था जो सिर्फ एक मिठास और अपनेपन की गंध से सराबोर कर रहा था।

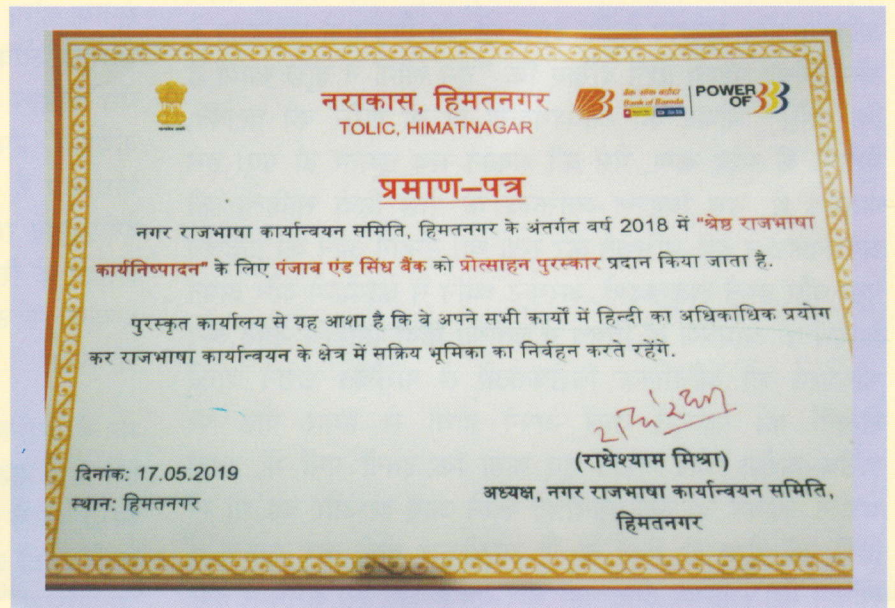
पता नहीं इस मुलाकात के कथ्य को कितनी बार किसे-किसे सुनाया होगा मैंने। कुछ ने इसे मेरी डींग माना तो कुछ ने हमारा सौभाग्य लेकिन सिर्फ मैं जानता हूँ कि उस मुलाकात के पश्चात मेरा साहित्य अनुराग कितना बढ़ गया। मैं रेणु जी को सिर्फ उनकी कथाओं, उपन्यासों से जानता था कि वे सहज हैं, आँचलिक कथाकार हैं और उनके लेखन में अपनी मिट्टी की सुगंध सदैव दैदीप्यमान रहती है। यह वही सुगंध है जो आज मुझे यह लेख लिखने के लिए प्रेरित कर रही है क्योंकि 40 वर्ष व्यतीत होने के बावजूद न उस स्मृति की मिठास कम हुई और न ही उसकी जीवंतता।

मन में प्रसन्नता और उमंग लिए वापस फारबीसगंज आने के लिए हम दोनों सहपाठी सिमरहा रेलवे स्टेशन पर ट्रेन में बैठे गए थे; गाड़ी छूटने ही वाली थी लेकिन उससे पहले गाड़ी की एक लंबी सीटी और ऐसा प्रतीत हुआ जैसे फिर कोई रेणु जी को ‘फणीशरा’ कहकर आवाज दे रहा हो।

आँचलिक कार्यालय, भोपाल

नराकास उपलब्धियाँ

सचिवालय, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, आयुध निर्माण इटारसी द्वारा हमारे बैंक की शाखा इटारसी को श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। श्री एच. आर. दीक्षित, महाप्रबंधक एवं नराकास अध्यक्ष के करकमलों से राजभाषा शील्ड प्राप्त करते हुए शाखा प्रभारी श्री रंजीत सिंह।



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हिमतनगर द्वारा हमारे बैंक की शाखा हिमतनगर को श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया।

नराकास उपलब्धियाँ



बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जबलपुर द्वारा हमारे बैंक की शाखा जबलपुर को राजभाषा नीति कार्यान्वयन के उत्कृष्ट निष्पादन हेतु प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। चित्र में राजभाषा शील्ड के साथ शाखा में कार्यरत सुश्री सुषमा कौरव और श्री शिवशंकर सोनकुसरे।



बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति बरेली द्वारा हमारे बैंक के आंचलिक कार्यालय, बरेली को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। बैंक नराकास बरेली की छमाही समीक्षा बैंक के दौरान उपनिदेशक कार्यान्वयन गृह मंत्रालय, भारत सरकार, श्री अजय मलिक आंचलिक प्रबंधक, बरेली श्री विनोद कुमार पांडे को राजभाषा शील्ड प्रदान करते हुए।

सिक्के पे सिक्का

कामेश सेठी

आज से लगभग पाँच वर्ष पूर्व मैंने इसी संदर्भ में एक लेख लिखा था 'सिक्के की समस्या' और आज फिर उसी पर लेख लिख रहा हूँ लेकिन दोनों का विषय एक ही है लेकिन समस्या अलग-अलग है।

आज से पाँच छः वर्ष पूर्व बाजार में सिक्कों का अभाव था। लोग सिक्कों के लिए तरसते थे और सौ रुपये के सिक्के एक सौ दस रुपये पर मिलते थे। लेकिन आज स्थिति विपरीत है, सिक्के इतने ज्यादा हैं कि लोग इसे देखते ही मुँह सिकोड़ने लगते हैं। दोनों ही समस्या का समाधान खोजना आवश्यक है। ये समस्या ठीक शरीर के रक्तचाप की तरह है जो कि न तो बहुत ज्यादा अच्छी है और न ही बहुत कम। रक्त-चाप के लिए तो दवा का अविष्कार हुआ है जो कि संतुलन बनाए रखता है लेकिन सिक्कों की समस्या की समाधान के लिए हमें कुछ करना पड़ेगा।

अब हम बात करते हैं आज की समस्या के बारे में - आज बाजार में सिक्कों की बहुतायत है। कहीं-कहीं पर एक रुपये के छोटे सिक्के तो चलने ही बंद हो गए। एक बार की घटना मुझे याद आती है कि मैं एक दुकान से सामान ले रहा था और वहीं एक दूसरा ग्राहक कुछ सामान ले रहा था थैले से चिल्लर पकड़ा दिए। दुकानदार ने उस ग्राहक को गुस्से से देखते हुए कहा कि आप सामान छोड़ दे पर मैं ये सिक्के नहीं ले सकता, अभी व्यवसाय के समय इसे कौन गिनेगा। दुकानदार सिक्के लेने से कतराने लगे हैं। कुछ व्यापारी तो मुझे कहते हैं कि मेरे पास 15 लाख के सिक्के इकट्ठे हो गए हैं। इसका क्या करूँ? कोई बैंक की शाखा इसे लेती नहीं। एक दिन एक बैंक की शाखा में एक कैशियर और ग्राहक के बीच सिक्कों को लेने के लिए झड़प हो रही थी। उस शाखा में उस कैशियर के सामने लम्बी कतार में लोग खड़े थे और यह ग्राहक उसे बीस हजार सिक्के दे रहा था। उस कैशियर की स्थिति के बारे में अंदाजा लगाया जा सकता है कि उसके लिए कितनी समस्या थी। रोजाना बैंक की शाखाओं में झगड़े होते हैं कि आप सिक्के लेने से मना नहीं कर सकते। सिक्के लेने से बैंक स्टाफ परेशान हैं क्योंकि करेंसी चेस्ट और भारतीय रिज़र्व बैंक इन्हें लेता नहीं आखिर जाएँ तो कहा जाएँ। ऐसी एक नहीं कई घटनाएँ हैं जो हर दिन अलग-अलग जगहों पर सिक्कों की अधिकता के कारण घटित होती है। सिक्को का इस तरह से जमा हो जाने के पीछे सिक्के से जुड़ी अफवाहों का फैलना भी है। अभी हाल के दिनों में एक समाचार पत्र के अनुसार कुछ जगहों विशेषकर दक्षिण भारत के राज्य जैसे तेलंगाना, आंध्रप्रदेश आदि राज्यों के ग्रामीण इलाकों में 10 रुपये के सिक्कों की वास्तविकता को लेकर समस्या सामने आई कि लोग इसे लेने से मना करने लगे। सिक्कों की समस्या है तो बड़ी, कहीं कुछ कम तो कहीं ज्यादा।

अब बात करते हैं समस्या के कारणों पर-बाजार में सिक्कों के अभाव से अधिशेष एवं अतिरिक्त पूर्ति का कारण क्या है? पिछले पाँच-छः वर्षों में बाजार में काफी बदलाव आया है। विशेषतः नोटबंदी के बाद से बाजार में बहुत तेजी से सिक्कों का आगमन हुआ है। नोटबंदी के बाद बाजार में करेंसी नोट का अभाव हो गया जिसकी पूर्ति के लिए भारतीय रिज़र्व बैंक

ने कमर कस रखी थी और सिक्कों को धड़ल्ले से बाजार में उतारना शुरू कर दिया जिससे एकदम से बाजार में सिक्कों का प्रचलन बढ़ गया फिर कुछ लोगों ने अपने पास रखे सिक्के भी धड़ल्ले से बाहर निकालने शुरू किए फलतः कुछ ही महीनों में बाजार में सिक्के ही सिक्के हो गए। एक हालिया सर्वे के अनुसार 10 रुपये के सिक्कों की मात्रा 2016 में 3,703 मिलियन से बढ़कर 2018 में 5,049 मिलियन हो गए। फिर करेंसी नोट का अभाव भी समाप्त हो गया और लोगों ने सिक्कों को वापस लेने में वो तेजी नहीं दिखाई थी। फलतः बाजार सिक्कों से भर गया। मनुष्य का एक स्वभाव भी होता है जिस चीज की बाजार में किल्लत न हो उसे कोई लेना पसंद नहीं करता और जब किल्लत होती है तो किसी को आसानी से नहीं देता है।

वास्तविकता यह है कि आर्थिक चक्र के कारण कभी करेंसी नोटों, सिक्कों की बाजार में कमी हो जाती है और कुछ दिनों बाद बहुतायत हो जाती है। भारतीय रिज़र्व बैंक सिक्कों को वापस बैंकों से नहीं ले रहे हैं जिससे समस्या का तुरंत समाधान हो सकता है या फिर जनता को लगभग एक वर्ष और इंतजार करना पड़ेगा सामान्य स्थिति में आने में। बैंकों के पास सबसे बड़ी समस्या सिक्कों के गिनने की एवं उसे रखने की आ रही है। यही समस्या भारतीय रिज़र्व बैंक की भी है। एक बात और है जो बातें सिक्कों के अभाव के समय थी जैसे कि सिक्कों को गला दिया जाता है या ब्लेड बनाया जाता है इत्यादि सब गलत साबित हो रही हैं क्योंकि यदि ऐसा होता तो फिर अब ये क्यों नहीं हो रहा है।

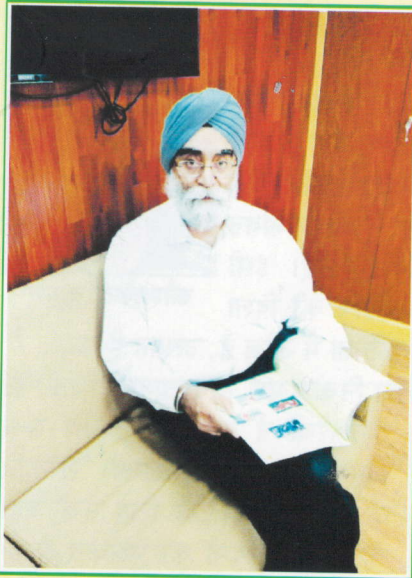
उपाय

इस समस्या के समाधान के लिए दो उपाय हैं एक तो जिस तरह से भारतीय रिज़र्व बैंक ने अभाव के समय सिक्कों काउंटर्स से बोरी-बोरी बाँटा था वैसे ही अब जनता से वापस भी ले या बैंकों के करेंसी चेस्ट से वापस ले या फिर बैंक सिक्के वापस लेने में आना-कानी न करें। तभी समस्या का हल हो सकता है क्योंकि एक बार लोगों को पता चल जाएगा कि इनके निकलने का साधन है तो फिर ये सिक्कों की अतिरिक्तता की समस्या रहेगी ही नहीं। रिज़र्व बैंक द्वारा समय-समय पर सिक्कों की वास्तविकता को लेकर आ रही अफवाहों के खंडन द्वारा, उनका प्रचार कर आम जनता के मन में यह विश्वास जगाना होगा कि सिक्कों का व्यवहार सामान्य रूप से किया जाए। सिक्के समस्या नहीं हैं, उनका प्रचलन सामान्य रूप से बाजार में किया जा सकता है। समस्या का समाधान स्वतः निकल जाएगा। अब इसके लिए बैंकों को बढ़-चढ़कर आगे आने की आवश्यकता है।

“वास्तविकता यह है कि सिक्के समस्या नहीं हैं, बड़ा ही शुभकारी है, इनके खनक से ही बटुआ और जेबें भरी-भरी रहती हैं।”

आँचलिक प्रबंधक, कोलकाता

ਪਤਰਿਕਾ ਕਾ ਗੌਰਵ



ਬੈਂਕ ਕੇ ਮਾਨਨੀਯ ਅਧਯਕਸ਼ ਮਹੋਦਯ (ਗੈਰ ਕਾਰਯਕਾਰੀ)
ਡਾ. ਚਰਨ ਸਿੰਘ ਜੀ ਪਤਰਿਕਾ ਕਾ ਅਵਲੋਕਨ ਕਰਦੇ ਹੁਏ ।

ਵਿਵਿਧ ਸਮਾਚਾਰ

ਯੋਗ ਦਿਵਸ

ਬੈਂਕ ਕੇ ਸਟਾਫ਼ ਪਰਿਕਸ਼ਣ
ਕੇਂਦਰ ਕੇ ਰੋਹਿਣੀ ਮੇਂ ਯੋਗ
ਦਿਵਸ ਕਾ ਆਯੋਜਨ ਕਿਆ ਗਯਾ
ਜਿਸਮੇਂ ਬੈਂਕ ਕੇ ਸਟਾਫ਼ ਨੇ ਸਹਭਾਗਿਤਾ ਕੀ ।



ਆਂਚਲਿਕ ਕਾਰਯਾਲਯ, ਜਯਪੁਰ ਮੇਂ ਯੋਗ
ਦਿਵਸ ਕਾ ਆਯੋਜਨ ਕਿਆ ਗਯਾ
ਜਿਸਮੇਂ ਬੈਂਕ ਕੇ ਸਟਾਫ਼ ਨੇ ਸਹਭਾਗਿਤਾ
ਕੀ ।



ਸ਼ਪਥ ਪਤਰ

ਪਲਾਸਟਿਕ ਮੁਕਤ ਪਰਯਾਵਰਣ

ਦਿਨਾਂਕ 20.05.2019 ਕੋ ਪਰਧਾਨ ਕਾਰਯਾਲਯ ਮੇਂ “ਪਲਾਸਟਿਕ
ਪਰਦੂਸ਼ਣ ਕਮ ਕਰਨਾ” ਕੇ ਅਭਿਆਨ ਕੀ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਕੀ ਗਈ। ਇਸ
ਅਵਸਰ ਪਰ ਪਰਧਾਨ ਕਾਰਯਾਲਯ ਕੇ ਪਰਤ੍ਯੇਕ ਵਿਭਾਗ ਔਰ ਆਂਚਲਿਕ
ਕਾਰਯਾਲਯ ਮੇਂ ਕਾਰਮਿਕੋਂ ਨੇ ਪਲਾਸਟਿਕ ਵਸਤੂਔਂ ਕਾ ਉਪਯੋਗ ਨ
ਕਰਨੇ ਕਾ ਸਾਂਕਲਪ ਲਿਆ।



ਆਤੰਕਵਾਦ ਔਰ ਹਿੰਸਾ ਕੇ ਵਿਰੁੱਧ ਸ਼ਪਥ

“ਹਮ ਭਾਰਤਵਾਸੀ ਅਪਨੇ ਦੇਸ਼ ਕੀ ਅਹਿੰਸਾ ਔਰ ਸਹਨਸ਼ੀਲਤਾ ਕੀ ਪਰੰਪਰਾ ਮੇਂ
ਦ੍ਰੁਢ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਰਖਦੇ ਹੈਂ ਤਥਾ ਨਿਸ਼ਠਾਪੂਰਵਕ ਸ਼ਪਥ ਲੇਦੇ ਹੈਂ ਕਿ ਹਮ ਸਭੀ
ਪਰਕਾਰ ਕੇ ਆਤੰਕਵਾਦ ਔਰ ਹਿੰਸਾ ਕਾ ਡਟਕਰ ਵਿਰੋਧ ਕਰੇਂਗੇ। ਹਮ ਮਾਨਵ
ਜਾਤਿ ਕੇ ਸਭੀ ਵਰਗੋਂ ਕੇ ਭੀਚ ਸ਼ਾਂਤਿ, ਸਾਮਾਜਿਕ ਸਦਭਾਵ ਤਥਾ ਸੂਝਬੂਝ
ਕਾਯਮ ਕਰਨੇ ਔਰ ਮਾਨਵ ਜੀਵਨ ਮੂਲ੍ਯੋਂ ਕੋ ਖਤਰਾ ਪਹੁੰਚਾਨੇ ਵਾਲੀ ਔਰ
ਵਿਘਟਨਕਾਰੀ ਸ਼ਕਤਿਯੋਂ ਸੇ ਲੜਨੇ ਕੀ ਭੀ ਸ਼ਪਥ ਲੇਦੇ ਹੈ।”



राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर'

साहित्य और समाज का संबंध अन्योन्याश्रय रहा है। समाज का यथार्थ जहां साहित्य को जन-आकांक्षाओं से संपृक्त कर उसे जीवंत रखता है तो वहीं साहित्य, समाज के आगे जलती वह मशाल है जो समाज को भ्रम की दिशा व दशा में राह दिखलाता है। समाज को गतिशील बनाए रखने में राजनीतिक, धार्मिक-सांस्कृतिक व ऐतिहासिक मान्यताओं की भूमिका प्रभावशाली रही है। अगर मानवीय सभ्यता के विकास के चरणों को ध्यान से देखेंगे तो यह ज्ञात होता है कि एक सभ्य मानवीय समाज की पहचान उस समाज के द्वारा रचित साहित्य से की जाती है। ऐसा इसीलिए संभव हो पाया है क्योंकि साहित्य विधा में अन्य सभी

विधाओं का समावेश होता है। मसलन, साहित्य में राजनीतिक, धार्मिक-सांस्कृतिक व ऐतिहासिक दृष्टियां सन्निहित रहती हैं। जैसा कि विदित है, साहित्य कभी भी समाज निरपेक्ष नहीं रह सकता और इसीलिए एक अच्छा साहित्यकार कभी भी समाज निरपेक्ष या अपने समकालीन परिस्थितियों से तटस्थ हो रचना नहीं कर सकता। जिस किसी भी रचनाकार की रचना में समाज की इच्छाएं, आकांक्षाएं, अनुभूतियां, अपनी

वास्तविकता के साथ स्पंदित होती हैं, वह रचनाकार एक श्रेष्ठ रचनाकार होता है तथा उसकी रचनाएं कालजयी होती हैं। हिंदी साहित्य में एक ऐसे ही रचनाकार हैं- रामधारी सिंह 'दिनकर'। रामधारी सिंह 'दिनकर' को राष्ट्रकवि के नाम से जाना जाता है। दिनकर जी का जन्म ग्राम सिमरिया, जिला बेगूसराय, बिहार में 23 सितंबर 1908 को एक साधारण किसान परिवार में हुआ। एक साधारण किसान परिवार में जन्म लेकर, ग्रामीण परिवेश में आरंभिक शिक्षा प्राप्त कर साहित्य अकादमी, ज्ञानपीठ, पद्म विभूषण जैसे पुरस्कारों व सम्मान को प्राप्त करना दिनकर जी की प्रतिभा व उनकी लगन को दर्शाता है। दिनकर जी के पिता का नाम बाबू रविराय (रविसिंह) था और पितामह का नाम शंकर राय था। उस जमाने में सिमरिया गांव के घर-घर में नित्य 'रामचरितमानस' का पाठ होता था। उनके पिता जी अपने समाज में रामचरितमानस के मर्मज्ञ समझे जाते थे और लोगों का ख्याल था कि उनको यह ग्रंथ लगभग पूरी तरह कंठस्थ है। इसी धर्ममय वातावरण में बालक रामधारी का जन्म

और लालन-पालन हुआ।

जिस समाज में उन्होंने होश संभाला वह साधारण किसानों और खेतिहर मजदूरों का समाज था, जहां अधिकांश लोग निरक्षर और अंधविश्वासी थे। 'दिनकरजी' ने अपने जीवन मूल्य इसी परिवेश में स्थिर किए। इसी वातावरण में उन्होंने अपने साहित्य की दिशा निर्धारित की। दिनकरजी की कविता में ओज है, उत्साह है, क्रांति है, विद्रोह है और इन सब बातों का निचोड़ एक मानवतावादी चिंतन है।



कौशलेन्द्र कुमार

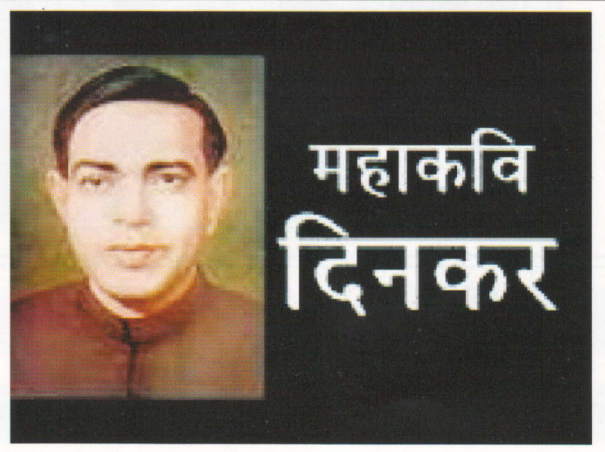
दिनकरजी ने कविता के साथ-साथ निबंध व पुस्तकें भी लिखीं। 'संस्कृति के चार अध्याय' के लिए उन्हें जहां साहित्य अकादमी का पुरस्कार प्रदान किया गया वहीं 'उर्वशी' काव्य संग्रह के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ। गौरतलब है कि द्वापर युग की ऐतिहासिक घटना महाभारत पर आधारित उनके प्रबन्ध काव्य 'कुरुक्षेत्र' को विश्व के 100 सर्वश्रेष्ठ काव्यों में 74वाँ स्थान दिया गया है। गद्य तथा पद्य की दोनों विधाओं में दिनकरजी की रचनाशीलता ने

भारतीय अध्येयताओं की चिंतनधारा को प्रौढ़ व परिमार्जित किया है। इस संदर्भ में प्रसिद्ध कवि श्री हरिवंशराय बच्चन जी की यह बात द्रष्टव्य है कि- 'दिनकरजी को एक नहीं, बल्कि गद्य, पद्य, भाषा और हिंदी-सेवा के लिए अलग-अलग चार ज्ञानपीठ पुरस्कार दिये जाने चाहिए।' अतः रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविताओं, निबंधों, पुस्तकों के माध्यम से उनके चिंतन, उनकी रचनाधर्मिता तथा रचना-कौशल को समझना है क्योंकि इन्हीं तंतुओं से 'राष्ट्रकवि' जैसे विराट व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

आज के परिदृश्य में यह कहना गलत नहीं होगा कि दिनकर सबसे अधिक चर्चित कवि हैं। लेखों में, निबंधों में, भाषणों में, बहसों में आज दिनकरजी की कविताएं सबसे अधिक प्रयुक्त की जाती हैं।

“क्षमा शोभती उस भुजंग को, जिसके पास गरल हो; उसको क्या जो दन्तहीन, विषहीन, विनीत, सरल हो।”

(कुरुक्षेत्र से)



“सच पूछो तो सर में ही, बसती है दीप्ति विनय की; सन्धि वचन संपूज्य उसी का, जिसमें शक्ति विजय की।”,

“दो न्याय अगर तो आधा दो, पर इसमें भी यदि बाधा हो, तो दे दो केवल पाँच ग्राम, रक्खो अपनी धरती तमाम।”

(रश्मिरथी / तृतीय सर्ग / भाग 3)

“जब नाश मनुज पर छाता है, पहले विवेक मर जाता है।”

(रश्मिरथी / तृतीय सर्ग / भाग 3)

आदि ऐसी पंक्तियाँ हैं कि आज भी जन-जन के मुख पर रहती हैं। दिनकर की कविताएँ इतनी लोकप्रिय क्यों हैं, यह प्रश्न सहसा ही मस्तिष्क के किसी कोने में उठते हैं। ऐसा नहीं है कि हिंदी भाषा के

अन्य कवियों को जनता ने आदर नहीं दिया या उनकी कविताओं को नहीं पढ़ा, परंतु दिनकरजी की कविताओं की तरह उन्हें कंठस्थ नहीं किया। इसका एक बड़ा कारण रहा है—ओज और उत्साह का स्वर। इनकी कविताओं में लय है, प्रवाह है और लय-प्रवाह के इस गति से ओज का नाद होता है जो इनकी कविताओं को विशिष्ट बनाती हैं। वीरता, उत्साह, ओजस्वीता ऐसे गुण हैं जो किसी भी समाज के लिए अभिलषित होते हैं। दिनकर की कविताओं में यह

सब है। दर्शन की बड़ी-बड़ी निगूढ चिंतन को दर्शाने के बरअक्स साधारण जनता के लिए साधारण भाषा में कविता को मुखरित किया। समाज में न्याय, समानता, बराबरी आदि जैसे सुखद स्थितियों के लिए दिनकरजी ने कविता में अपनी बात रखी। यहां उनकी एक प्रसिद्ध पंक्ति—“श्वानों को मिलता दूध-वस्त्र, भूखे बालक अकुलाते हैं, माँ की हड्डी से चिपक, ठिठुर जाड़ों की रात बिताते हैं।” बरबस ही याद हो आ रही है। समाज में दिख रही असमानता की विद्रुप्ताओं को कितनी सूक्ष्मता और व्यंगात्मक तरीके से राष्ट्रकवि ने यहां प्रस्तुत किया है। इसीलिए दिनकर, पौरुष और ललकार के कवि माने जाते हैं। दरअसल लोक-जागरण दिनकरजी की कविताओं का एक मुख्य उद्देश्य रहा है। दिनकरजी की कविताएँ जनता के जीवन को केंद्र मानकर चलती हैं। इसीलिए मनुष्य जीवन की अनेक समस्याओं का

साक्षात्कार करवाती है। प्रेम, काम, आध्यात्म, युद्ध, शांति, राष्ट्रवाद, समाजवाद जैसी एक-दूसरे से एकदम भिन्न प्रतीत होने वाली चिंतन धाराओं पर एकसाथ सफलतापूर्वक लिखते हैं। समष्टि में देखने पर यह प्रतीत होता है कि दिनकरजी के मानसपटल पर तुलसीदास जी के ‘रामचरितमानस’ और मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी की रचनाओं का काफी प्रभाव है। देश का स्वतंत्रता संग्राम, विश्व-स्तर पर स्वातन्त्र्य-कामियों के संघर्ष, गांधी जी के कार्य, विचार और उनका विराट व्यक्तित्व, लेनिन के नायकत्व में की गई क्रान्ति, भगत सिंह की और गणेश शंकर विद्यार्थी की शहादतें, स्वामी सहजानन्द सरस्वती का किसान आन्दोलन, स्वामी विवेकानन्द, राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, द्वितीय विश्वयुद्ध, आदि ने उनके मन पर गहरी छाप छोड़ी। इन सब विचारों



की अभिव्यक्ति जब कविता में होने लगी तो कभी ‘हुंकार’, कभी ‘रश्मिरथी’, कभी ‘परशुराम की प्रतीक्षा’ तो ‘कुरुक्षेत्र’ जैसी ख्यातिनाम रचनाओं से हिंदी साहित्य लाभान्वित हुआ। दिनकर की प्रमुख काव्य-कृतियाँ हैं ‘रेणुका’, ‘हुंकार’, ‘रश्मिरथी’, ‘रसवंती’, ‘नील कुसुम’, ‘कुरुक्षेत्र’, ‘उर्वशी’ आदि। उनकी प्रमुख गद्य-कृतियाँ हैं ‘संस्कृति के चार अध्याय’, ‘शुद्ध-कविता की खोज’, ‘साहित्योंमुखी’, ‘दिनकर की डायरी’,

‘काव्य की भूमिका’, ‘रेती के फूल’, ‘मिट्टी की ओर’, ‘अर्धनारीश्वर’ आदि, जिनमें उनके विभिन्न विचारात्मक एवं समीक्षात्मक निबंध संग्रहीत हैं। 11 दिसंबर 1973 को जब राष्ट्रकवि दिनकर जी को उनकी ख्यातिनाम रचना ‘उर्वशी’ के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया जा रहा था, तब अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा था— (“भगवान ने मुझको जब इस पृथ्वी पर भेजा तो मेरे हाथ में एक हथौड़ा दिया और कहा कि जा तू इस हथौड़े से चट्टान के पत्थर तोड़ेगा और तेरे तोड़े हुए अनगढ़ पत्थर भी कला के समुद्र में फूल के समान तैरेंगे।... मैं रंदा लेकर काठ को चिकनाने नहीं आया था। मेरे हाथ में तो कुल्हाड़ा था जिससे मैं जड़ता की लकड़ियों को फाड़ रहा था।..”)

अपने प्रशंसकों के बीच, जिनमें इन पंक्तियों के लेखक से लेकर स्व. जवाहरलाल नेहरू तक शामिल हैं, दिनकर, पौरुष और ललकार के कवि माने जाते हैं। राम स्वरूप चतुर्वेदी जैसे प्रशंसा-कृपण आलोचकों ने भी उन्हें उद्बोधन का कवि माना है।

दिनकर के छात्र जीवन का समय मोटे तौर पर स्वाधीनता संघर्ष में असहयोग आंदोलन का युग था। उस समय की पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं में इतिहास और संस्कृति, धर्म और दर्शन तथा राजनीति से संबंधित सामग्री ही अधिक पाई जाती थी। उनमें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में संबंधित चित्रों, कार्टूनों तथा देशभक्ति पूर्ण कविताओं और गीतों का ही बाहुल्य रहता था। राष्ट्रीयता, स्वतंत्रता, समाजवाद और साम्यवाद की चारों तरफ धूम थी। इसी समय 'दिनकर' राष्ट्रीय नेताओं की सभाओं में जाने लगे थे। उन दिनों पटना से प्रकाशित होने वाली 'देश' पत्रिका तथा कन्नौज से प्रकाशित 'प्रतिभा' पत्रिका में 'दिनकर' की कविताएं स्थान पाने लगी थीं। 'देश' के संस्थापक डॉ. राजेंद्र प्रसाद थे जो स्वतंत्र भारत के पहले राष्ट्रपति बने। उनकी पहली कविता जबलपुर से प्रकाशित 'छात्र-सहोदर' में छपी थी, जिसके संपादक पं. मातादीन शुक्ल थे। उसी जमाने में बेगूसराय (दिनकर का गृह जिला) से 'प्रकाश' नामक पत्रिका प्रकाशित होती थी जिसमें दिनकर की कविताएं प्रमुखता से छपा करती थीं। कहते हैं कि इसी समय उन्होंने अपना उपनाम 'दिनकर' रखा। दिनकर का शाब्दिक अर्थ होता है- सूर्य। सूर्य का एक प्रमुख लक्षण है, स्वयं के प्रकाश से औरों को आलोकित करना। स्वयं के तेज से औरों को तेजस्वी बनाना। स्वयं की ऊर्जा से औरों को स्पंदित करना। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने अपनी काव्य प्रतिभा और रचना कौशल से हिंदी काव्य को आलोकित किया, हिंदी भाषा को तेज प्रदान किया और भय-गुलामी-गरीबी से शिथिल हो चुकी जनता को नवीन ऊर्जा से स्पंदित किया। अतः दिनकर जी अपने समय में साहित्यिक क्षितिज के सूर्य थे। सूर्य में एक तेज होता है, औरों को प्रकाशित-प्रभावित करने का सामर्थ्य होता है और ये सब खूबियां दिनकरजी के व्यक्तित्व व कृतित्व में स्पष्ट तौर पर परिलक्षित होता है। दिनकर जी अपनी सर्वश्रेष्ठ काव्य रचना उर्वशी में स्वयं की तरफ संकेत किया है। पुरुरवा और उर्वशी के संवाद के अन्तर्गत पुरुरवा के द्वारा आत्म परिचय करते हुए लिखा है-

मर्त्यमानव के विजय का तूर्य हूँ मैं।

उर्वशी अपने समय का सूर्य हूँ मैं॥

अंधतम के भाल पर पावक जलाता हूँ।

बादलों के सीस पर स्पन्दन चलाता हूँ॥

दिनकरजी की साहित्यिक जीवन की एक बड़ी विशेषता यह है कि राजनीति और शासन के द्वारा लगातार सम्मानित किए जाने, पद दिए जाने के बावजूद अपनी लेखन-शैली को स्वच्छंद रखा। राजा के दरबार में बैठ राजा की कृपाकांक्षी कवि नहीं थे दिनकरजी। उनकी लेखन शैली सत्ता के गलियारों से उसी तरह अप्रभावित रही जैसे जल बीच रहकर भी कमल का फूल जल से असंपृक्त रहता है। राष्ट्रकवि की रचनाओं को अगर हम ध्यान से देखते हैं तो यह पाते हैं कि उनकी आरंभिक रचना प्रक्रिया काव्य में हुई तथा तदंतर यह गद्य की तरफ मुड़ती चली गई। इसका एक कारण यह है कि कविता में भावोच्छास की अधिकता होती है तथा गद्य में चिंतन की। इसको स्पष्ट करते हुए एक जगह दिनकर जी कहते हैं कि 'सरस्वती की जवानी कविता है और उसका बुढ़ापा दर्शन है।' अर्थात् ज्ञान जब अपने यौवन में होता है यह कविता के रूप में अभिव्यक्त होती है और जब ज्ञान में परिपक्वता आती है, यह दर्शन-चिंतन में अभिव्यक्त होता है। आरंभ में राष्ट्रप्रेम, क्रांति का उद्घोष करने वाली कविताओं की जगह संस्कृति के चार अध्याय जैसी विचारोत्तेजक पुस्तकें लिखी जाने लगी। ओज और उत्साह से पूर्ण लयात्मक काव्यों ने धीरे-धीरे बौद्धिक व गंभीर चिंतन की आलोचनात्मक निबंध, आलेख का रूप लेने लगी। दरअसल, विचारों में परिवर्तन किसी भी चिंतनशील मनुष्य का सहज लक्षण है और जब यह मनुष्य एक साहित्यकार होता है तब यह परिवर्तन सिर्फ विचारों तक सीमित न रहकर शैली तक दृष्टिगत होने लगता है। दिनकर जी की साहित्यिक यात्रा इसी प्रकार गतिशील रहती है। उनके साहित्यिक-कोश में कविताएं हैं, संस्मरणात्मक गद्य है, आलोचनात्मक निबंध है, भारतीय संस्कृति के सोपाणी विकास को प्रस्तुत करती शोधपूर्ण पुस्तकें हैं। दिनकरजी की सभी साहित्यिक कृतियों के केंद्र में मानव है और इनकी दृष्टि मानवतावादी रही है।

रामधारी सिंह दिनकर के प्रमुख काव्य- संग्रह हैं-

'रेणुका'(1935),

'हुंकार'(1938),

'रसवती'(1939),

'कुरुक्षेत्र'(1946),

'रश्मिर्वाती'(1952),

'ऊर्वशी'(1961)।

उनकी आरंभिक रचनाओं से लेकर परवर्ती रचनाओं तक में आत्ममंथन रहा है। कभी तो यह आत्ममंथन व्यक्ति के स्तर है तो कभी पूरे ऐतिहासिकता के स्तर पर। व्यक्ति की अस्मिता और उस अस्मिता को पाने की जिजीविषा, युद्ध और शांति के मध्य स्थापित

संतुलन पर चिंतन, भारत के गौरवपूर्ण अतीत का विश्लेषणात्मक मंथन, मानवीय चेतना का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, आदि विविध विषयों पर राष्ट्रकवि ने सर्जना की है। 'कुरुक्षेत्र' में महाभारत की कथा के शांति पर्व को केंद्र में रखा गया है। इसमें शांति के गंभीर प्रयास, युद्ध की अनिवार्यता और भीषण युद्ध में होने वाले जन संहार पर भीष्म और युधिष्ठिर के मध्य संवाद के माध्यम से अपने विचार रखे हैं। 'रश्मिरथी' में सामाजिक असमानताओं के यथार्थ को कर्ण के चरित्र के द्वारा दर्शाया गया है। 'ऊर्वशी' में मानवीय कामना-वासना को सूक्ष्मातिसूक्ष्म दृष्टि से परिलक्षित किया गया है। 'ऊर्वशी' को स्वयं दिनकरजी ने कामाध्याय की संज्ञा दी है। ज्ञानपीठ से पुरस्कृत इस कालजयी काव्य नाटक में दिनकरजी ने ऊर्वशी और पुरुरवा के प्राचीन आख्यान को एक नए संदर्भ, एक नए अर्थ से संपृक्त करने का प्रयास किया है। इस कृति में पुरुरवा और ऊर्वशी दो अलग-अलग तरह की इच्छाएं, प्यास लेकर उपस्थित हुए हैं। पुरुरवा धरती पुत्र है और ऊर्वशी देवलोक से उतरी हुई अप्सरा है। पुरुरवा के भीतर जहां देवत्य की उत्कंठा है, वहीं ऊर्वशी सहजता से, निश्चित भाव से पृथ्वी का आनंद उठाना चाहती है।

'ऊर्वशी' प्रेम-सौन्दर्य और इससे प्रसूत काम का काव्य है। प्रेम-सौन्दर्य और काम से स्पंदित जीवन की मूल धारा में जीवन दर्शन संबंधी अन्य छोटी-छोटी धाराएँ पर्यवसित होती चली जाती हैं। प्रेम और काम का अत्यंत मनोवैज्ञानिक विधान कवि ने बहुत व्यापक धरातल पर किया है। 'संस्कृति के चार अध्याय' रामधारी सिंह दिनकर के बौद्धिक-चिंतन की प्रौढ़ता है। इस पुस्तक की प्रस्तावना देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने लिखा है। प्रस्तावना में पुस्तक के विषय पर वो लिखते हैं-

“मेरे मित्र और साथी दिनकर ने अपनी पुस्तक के लिए जो विषय चुना है, वह बहुत ही मोहक और दिलचस्प है। यह ऐसा विषय है जिससे, अक्सर, मेरा अपना मन भी औत-प्रोत रहा है और मैंने जो कुछ भी लिखा है, उस पर इस विषय की छाप, आप-से- आप पड़ गई है।”

यहां यह देखा जा सकता है कि संस्कृति के चार अध्याय से पं. नेहरू किस तरह प्रभावित थे। इस ख्यातिपूर्ण रचना की एक बड़ी बात यह

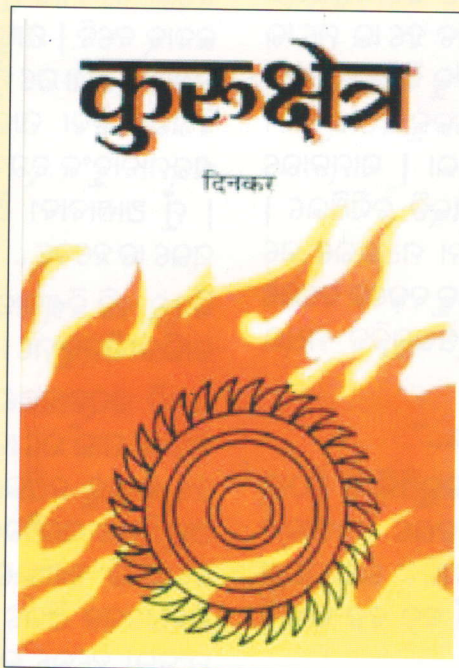
है कि दिनकरजी ने भारतीय संस्कृति और इसकी प्राचीनता पर गहनता से विचार किया तथा यह पाया कि सामासिक संस्कृति और राष्ट्रीयता भारतीय संस्कृति की प्रमुख पहचान रही है। इस संदर्भ में वो स्वयं पुस्तक में लिखते हैं- “पुस्तक लिखते-लिखते इस विषय में मेरी आस्था और भी बढ़ गई कि भारत की संस्कृति, आरंभ से ही, सामासिक रही है। उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम, देश में जहां भी जो हिंदू बसते हैं उनकी संस्कृति एक है एवं भारत की प्रत्येक क्षेत्रीय विशेषता हमारी इसी सामासिक संस्कृति की विशेषता है। तब हिंदू और मुसलमान हैं, जो देखने में अब भी दो लगते हैं, किंतु, उनके बीच भी सांस्कृतिक एकता विद्यमान है जो उनकी भिन्नता को कम करती

है। दुर्भाग्य की बात है कि हम इस एकता को पूर्ण रूप से समझने में असमर्थ रहे हैं। यह कार्य राजनीति नहीं, शिक्षा और साहित्य के द्वारा संपन्न किया जाना चाहिए।” इस पुस्तक में दिनकर जी ने भारत के सांस्कृतिक इतिहास को चार भागों में विभाजित उसे लिखने का प्रयत्न किया है। उन्होंने इस पर भी प्रकाश डाला है कि भारत का आधुनिक साहित्य प्राचीन साहित्य से किन-किन बातों में भिन्नता रखता है और इस भिन्नता का कारण क्या है? उनका विश्वास है कि भारतीय संस्कृति में चार बड़ी क्रांतियाँ हुई हैं और हमारी संस्कृति का इतिहास उन्हीं चार क्रान्तियों का इतिहास है। आर्य, द्रविड़, मुस्लिम तथा अंग्रेजों के प्रभाव को वो चार क्रांतियाँ मानते हैं।

24 अप्रैल 1974 को दिनकरजी इस दुनिया से विदा ले लेते हैं। राष्ट्रकवि दिनकरजी को स्थूल शरीर त्यागे हुए 45 वर्ष हो चुके हैं, परंतु

उनकी कविता, उनका चिंतन आज भी लोकप्रिय है। अभी हाल में ही संपन्न हुए लोकसभा चुनाव के दौरान होने वाले टी.वी. बहसों में दिनकरजी की कविताएं-पंक्तियाँ सर्वाधिक बोली-सुनी जाती देखी गईं। मंचों के कवियों के पसंदीदा कवि आज भी दिनकर ही हैं। शासक से लेकर जनता तक, युवा से लेकर प्रौढ़ तक, साहित्य के मनीषियों से लेकर तकनीकी दक्षता प्राप्त व्यवसायिक जनों तक, दिनकरजी की कविता का समान प्रभाव है। और यह हो भी क्यों न! क्योंकि सूर्य जब प्रकाश फैलाता है तो वह प्राणी मात्र में फर्क नहीं करता और इसीलिए वह सभी के लिए जरूरी भी बन जाता है। कुछ इसी प्रकार दिनकरजी की कविताएं, उनका साहित्य भी है।

प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग



ਭਗਰਿਕੁ ਭਰਤ ਪਿਛਤਾ

ਸਰੋਜਿਨੀ ਰੌਧ

ਓਡਿਆ ਰਚਨਾ ਹਿੰਦੀ
ਰੂਪਾਂਤਰ ਸਹਿਤ

ਬ੍ਰਹਮਾ ਕ ਗਾਘਾਰੇ ਯੇ। ਗ ਫਲੋਪਰੇ ਯੇਭੈਂ ਬਰੂ
ਗਰਾਹਕ ਮੇ। ਤੇ ਮਿਥੀਵਾਕੁ ਆਇਥਿਲੇ ਸਫੋਮਾਨੰਕ
ਮਧ੍ਯਰੂ ਫਾਸ ਬਾਬੂਕ ਨਾਮ ਮੇ। ਤੇ ਭਲਭਾਵਰੇ
ਮਨੇਅਛਿ... ਕਾਰੇ ਸਥੇ ਆਮ ਬ੍ਰਹਮਾ ਕ ਵਿਰੂਧਰੇ ਕਿਛਿ ਲਯਾਭੁ-
ਬਿਯਾਭੁ ਅਘਾਭੁਆ ਕਥਾ ਕਹਿਥਿਲੇ... ਯਾਭ ਯਾਭ ਆਸ਼ੁਰਿ ਕਹਿਗਲੇ
ਯੇ, ਆਪਣੇ ਮਧ੍ਯ ਅਨ੍ਯਮਾਨੰਕ ਭਲਿ ਏਹਿ ਤਿਨੇ ਵਰ੍ਥ ਬਭ
ਮਭਭਰੇ ਕਚਾਭ ਵਿਅਨ੍ਭੁ, ਯਾਭਾ ਮੇ। ਤੇ ਭਾਰਿ ਖਰਾਪ ਲਾਗਿਥਿਲਾ
। ਪ੍ਰਥਮ ਫੋਗਾਰੇ ਕੇਵ ਕ'ਥਾ ਕਾਭਾਕੁ ਏਧਿਤਿ ਹਥਾਸਪੁਰੇਥਾ
ਕਥਾ ਕਹਿ ਨਿਰਾਥ ਕਰਨ੍ਤਿ ਕੇ ? ਮੂੰ ਨਿਰੂਧਾਹਿਤ ਹੋਯੇ। ਮੇ। ਰ
ਆਸਨ ਭਵਿਥ੍ਯਰੇ ਅਨ੍ਯਕਾਰਮਯ ਫਿਨ੍ਗੁਭਿਕੁ ਫਿਵਾਸਵਪ੍ਧਨ
ਸਵਾਸਰੂਪ ਅਵਸਥਾਰੇ ਨਿਸ਼ਵਾਸ ਨਲੋਕਲੇਕੁ ਹੋਯੇ। ਮੇ।
ਕਯਾਵਿਨਰ ਬਾਭਾਵਰੇ ਸੁਗਨਧਿਤ ਹੋਯੇ। ਮੇ। ਸਾਮਨਾਰੇ
ਫੋਗੇਲਿ ਜਥੇ ਧਰੇ ਫਰਫਰੇ ਗਭੇ। ਕ੍ਯਕ੍ਤਿ ਕਹਿਥਿਲੇ।
ਕੋਥੇਵਿ ਵਿਫੋਗੇ ਅਤਰੇ ਮਥ ਮਥ ਕਾਸ਼ਨਾ ਮਧ੍ਯਰੇ ਸਥੇ
ਹੁਥਿਹੁਥਿ ਨਿਭਰੇ ਭਿਭਿਰੰਗ ਕਾਰਭਿਕੁ ਮੇ। ਆਗਕੁ ਬਭੇਕੇ ਫਲੇ
। ਰੰਗਾਨ ਕਾਰਭਰੇ ਛਾਪਿਯੋਯਥਿਵਾ ਅਕ੍ਸ਼ਰਗੁਭਿਕ ਮਧ੍ਯ
ਯੇਧਿਤਿ ਰੰਗ ਕ੍ਯਕ੍ਤਿ ਫੋਗੇਥਿਲਾ...

"ਫੋਗਾ ਰਾਮ ਗਰਮਾ, ਸਮਾਜਸਵੇ... ਪਤਰਕਾਰ..."

ਕਾਰਭਰੂ ਤਾਕ ਪਰਿਭਰੇ ਜਾਥੀਵਾਕੁ ਰੋਥੇਥਾ ਕਰੂਥਿਲਿ ਕਿ ਹੋਯੇ
ਸਥੇ ਕਹਿਵਾਕੁ ਲਾਗਿਲੇ, ਯਥੇ ਸਥੇ ਜਥੇ ਤਾਤਾਰਭ
ਏਕਾਭਗਾਭਾਗੇ ਤੇਵੇ ਸਥੇ ਮੇ। ਤੇ ਭਿਧੇ। ਭਿਧੇ ਰੇ ਮਧ੍ਯ
ਸਾਭਾਯੁ ਕਰਿਧਾਰਿਵੇ। ਆਸ਼ੁਰਿ ਰੂਥਾ ਪਾਭੈਂ ਬਭ ਬਭ ਪਾਰਥਿ
ਮਾਨੰਕੁ ਮਧ੍ਯ ਮਿਲਾਭ ਫੋਗੇ।

ਤਾਕ ਸਹਿਤ ਅਨ੍ਯਾਨ੍ਯ ਗਧ ਵਿ ਹੋਯੇ। ਸਥੇ ਯਾਭਾ ਹੋਭੇ ਏਹਿ
ਅਭਥਾ ਜਾਗਾਰੇ ਜਥੇ ਗੁਭਾਕਾਕ੍ਸ਼ਾ ਮਿਲਿਗਲੇ। ਏਹਾ ਭਾਵਿ ਮੂੰ
ਚਿਕੇ ਹਾਭਕਾ ਅਨੁਭਵ ਕਲਿ। ਨਰੇਫੇ ਫਾਸਬਾਬੂ ਮੇ। ਤੇ ਨਿਰਾਥ
ਕਰਿ ਥਿਲੇ... ਯਥੇ ਫਾਸਬਾਬੂਕਰ ਕਥਾ ਕਿਛਿ ਪਰਿਮਾਥ ਰੇ ਠਿਕੁ
ਥਿਲਾ।

ਏਹਿ ਗਾਘਾ ਪ੍ਰਾਯ ਰਾਰਿ ਵਰ੍ਥ ਹੋਯੇ। ਲਿਲਾਥੀ ਤਨ੍ਧ੍ਯਰੇ
ਤਿਨੇ ਪ੍ਰਵਰਨ੍ਧਕੰਕ ਕਥਲਿ ਹੋਯੇ। ਸਾਰਿਲੇਥੀ... ਕੇਵ
ਸੁਪਾਰਿਥਰੇ ਗਲਾ ਤ ਕਾਭਾਕੁ ਖਰਾਪ ਪ੍ਰਵਰਨ੍ਧਨ ਯੇ। ਗੂੰ
ਕਰਭ੍ਰਪਕ੍ਸ਼ ਕਥਲਿ ਕਰਿਫਲੇ। ਫਲਰੇ ਗਾਘਾਰ ਪ੍ਰਗਥਿ ਕਾਥਾ
ਪਾਭਲਾ। ਤਿਨੇ ਵਰ੍ਥ ਹੋਯੇ। ਗਾਘਾ ਕ੍ਸ਼ਤਿ ਰੇ ਰਹਿਥਿ। ਏਹਿ
ਫਿਗਰੇ ਕਰਭ੍ਰਪਕ੍ਸ਼ ਕਿਛਿ ਪਧਕ੍ਸ਼ਧੇ ਨਲੇਕਨ੍ਤਿ ਕੇ। ਲਿਲਾਗੁ
ਨਾਥੈਂ। ਗਾਘਾ ਖੋਯੇ। ਹੋਯੇ। ਏਧਰ੍ਯਨ੍ਤ ਆੰਠਲਿਕ

ਕਾਰ੍ਯਮਾਨ੍ਯਰੂ ਕਹੇ ਜਥੇ ਅਧਿਕਾਰੀ ਹੋਯੇ। ਨਿਰਾਕ੍ਸ਼ਰੇ
ਆਇ ਨਾਭਾਨ੍ਤਿ.. ਯਾਭਾ ਜਥਾਪਭੁਭਿ ਯੇ ਗਾਘਾਥਿ ਕੇਥੇ
ਅਵਭੇਕਿਤ ਅਵਸਥਾਰੇ ਰਹਿਥਿ। ਏਯੇ ਪਾਭੈਂ ਫਾਸ ਬਾਬੂ ਕੇ। ਯੇ
ਕਹਿਥਿਲੇ ਯੇ ਅਨ੍ਯਮਾਨੰਕ ਪਰਿ ਮੇ। ਸਮਯ ਵਿ ਮੇ। ਭਰੇ ਕਰਿ
ਯੇ। ਠਿਕੁ ਤ ਕਹਿਥਿਲੇ ਸਥੇ... ਕੇਵੇਕ ਕਹਿਵਾਰੇ ਗੇਥੇ। ਠਿਕੁ
ਨਥਿਲਾ... ਤੇਥੇ ਮੂੰ ਫੁਝ ਪਾਭ ਥਿਲਿ। ਸਥੇਫਿਨ ਠਾਭ ਮੂੰ ਪ੍ਰਰਥਿਭੁਭਾ
ਨਲੇਥਿਲਿ, ਫਿਨੇ ਮੂੰ ਨਿਭ੍ਰਥ ਫਾਸ ਬਾਬੂਕੁ ਤਾਕ ਭਕ੍ਤਿਰੇ ਭਰਿਭ੍ਰ
ਜਵਾਰ ਫੋਗੇ। ਯਾਕੁ ਮੂੰ ਪਥ ਸਵਰੂਪ ਸਵਾਕਾਰ ਕਲਿ। ਮੇ। ਤੇ
ਕ੍ਯਕ੍ਤਿ ਥਿਲਾ। ਯੇ ਮੂੰ ਗਰਮਾ ਬਾਬੂਕੁ ਸਾਭਾਯੁਰੇ ਗਾਘਾਥਿ ਠਿਕੁ
ਫਿਗਰੇ ਨਵਾ ਪਾਭੈਂ ਸਫਲ ਹੋਯੇ। ਜਥਾਨਾਥੈਂ ਕਾਥੈਂ ਯੇ
ਗਰਮਾਬਾਬੂਕੁ ਕ੍ਯਕ੍ਤਿ ਏਥੇ ਗਾਘਰੇ ਕ੍ਯਕ੍ਤਿ ਨਾਥਿਲਾ।
। ਮੂੰ ਆਗਾਭਾਥੀ ਥਿਲਿ ਯੇ ਗਰਮਾਬਾਬੂ ਮੇ। ਪਾਭੈਂ ਗਕ੍ਤਿਰੇ
ਸਰੇ। ਤੇ ਹੋਯੇ...

ਕਿਨ੍ਤੁ ਏਹਿ ਕ੍ਯਕ੍ਤਿ ਕੇਥੀ ਫਿਨ ਰਹਿਧਾਰਿਲਾ ਨਾਥੈਂ। ਸਮਯ ਗਥਿ
ਚਾਲਿਲਾ ਕਿਨ੍ਤੁ ਮੇ। ਫਾਰਾ ਕਿਛਿ ਕਾਮ ਹੋਯੇ। ਨਾਥੈਂ।

ਪ੍ਰਰਥਿ ਸਪ੍ਰਥਾਭਰੇ ਆੰਠਲਿਕ ਪ੍ਰਵਰਨ੍ਧਕੰਕ ਠਾਭ 'ਫਰਾਭਭੇ
ਫਿਗਰ' ਪਾਭੈਂ ਯੇ। ਰਵਾਰ ਗਲਿ ਗੁਥੀਵਾਕੁ ਪਭੁਥਿਲਾ। ਕਾਮ ਕਿਛਿ ਵਿ
ਹੋਯੇ। ਪਾਭੈਂ ਨਥਿਲਾ। ਗਰਮਾਬਾਬੂ ਯੇਭੈਂਬਰੂ ਰੂਥਾ ਪ੍ਰਵਰਥਾਵ
ਆਥੁਥਿਲੇ ਸਥੇਥਰੇ ਕਿਛਿ ਨਾ ਕਿਛਿ ਭੁਲ-ਭਥਾ ਰਹੁਥਿਲਾ। ਮੂੰ
ਫੋਗੇਥਿਲਿ ਕ੍ਯਕ੍ਤਿ ਸਥਾਭਰੇ ਸਥਾਭਰੇ ਯੇ। ਭਥੇ। ਭਥੇ ਸਥੇ ਭਾਰਿ
ਸਿਧ੍ਯਹੁਥਿ ਥਿਲੇ। ਭਿਧੇ। ਭਿਧੇ ਕਥਾ ਪਥਿਵਾਕ੍ਸ਼ਥੀ 'ਰੂਥਾ
ਮੰਭੁਰੀ ਹੋਯੇ। ਕਾਮ ਹੋਯੇ। ਯੇਥਿਥੈ...' ਪਰਿ ਭਲਿ ਕਿ ਭਲਿ ਕਥਾ
ਕਹੁਥਿਲੇ। ਕਿਨ੍ਤੁ ਤਾਕ ਫਾਰਾ ਅਥਾਯਾਭਥਿਵਾ ਕੋਥੇਵਿ ਰੂਥਾ
ਪ੍ਰਵਰਥਾਵ ਸਥਿਕੁ ਨਥਿਲਾ। ਮੂੰ ਫੁਝੇਧਾਰਿਲਿ... ਮੇ। ਤੇ ਫਾਭਾਕੁ
ਭਥਿਧਨ੍ਤਰੇ ਕਰਾਯਾਭਥਿਲਾ। ਕਿਨ੍ਤੁ ਮੂੰ ਕੇਥੈਂ ਸਥਰਕੁ ਥਿਲਿ।
ਤਾਕੁ ਠਿਕੁ ਸਮਯਰੇ ਚਿਹਨਿ ਪਾਰਿ ਥਿਲਿ। ਤੇਥੇ ਮੇ। ਤੇ ਫਾਭਾਕੁ
ਕਾ ਠਿਕਿਵਾਰੇ ਸਥੇ ਸਫਲ ਹੋਯੇ। ਪਾਰਿਥਿਲੇ। ਏਧਰਿਕਿ ਮੇ। ਤੇ
ਪ੍ਰਵਰਥਾਵਿਤ ਪਾਰਥਿਮਾਨੰਕ ਤਰਫਰੂ ਲਾੰਠ ਫੋਗਾਰ ਪ੍ਰਯਾਸ
ਮਧ੍ਯ ਕਰਾਯਾਭਥਿਲਾ। ਯੇਥੇਥੇਥੇ ਮੂੰ ਤਾਕ ਕਥਾ ਨ ਗੁਥੀਲਿ,
ਸਥੇ ਨਿਭਕੁ ਮੇ। ਠਾਭ ਫੁਰੇਕੇ ਨਲੇਕੇ। ਮੇ। ਤੇ ਗੰਗਾਸਨਾਨ
ਕਲਾ ਭਲਿ ਸਨ੍ਤੇ। ਸ ਮਿਲਿਥਿਲਾ। ਬਭ ਕ੍ਸ਼੍ਰਰੇ ਰਕ੍ਰਕ੍ਸ਼ੁਰੂ
ਕਾਭਾਰਿ ਆਇਲਿ। ਬਭ ਏਕ ਅਧਰੇ ਰੂ ਮੁਕ੍ਤਿ ਮਿਲਿਲਾ। ਅਵਥ੍ਯ
ਕਿਨ੍ਤੁ ਗਾਘਾ ਕ੍ਯਕ੍ਤਿ ਪਾਭੈਂ ਯੇਭੈਂ ਆਗਾ ਕਾਨ੍ਧਿਥਿਲਿ ਸਥੇ ਸਰੂ
ਨਿਰਾਥਾਰੇ ਪਰਿਥਾਤ ਹੋਯੇ। ਯੇਥਿਥੈਂ ਕ੍ਸ਼੍ਰ ਪਾਭਲਿ।

निंदक नियरे राखिए

प्रदीप रॉय

शाखा में ज्वाइन करने के बाद जो ग्राहक मुझसे मिलने आए थे उनमें से दास जी का नाम मुझे अच्छी तरह याद है क्योंकि उन्होंने हमारे बैंक के बारे में आलोचना भरे शब्द कहे थे... उट-पटांग सी बातें कही थी... जाते हुए कहा था कि औरों की तरह आप भी अपना तीन साल मजे में निकाल लेना... मुझे बुरा लगा था। पहले ही दिन की मुलाकात में कोई किसी से निर्लज्ज होकर हताशापूर्ण बातें करता है क्या ? मैं निरुत्साहित-सा होकर अपने आने वाले अंधकारमय दिनों के दुःस्वप्न के घुटन में अभी साँस लेने का प्रयास कर रहा था कि अचानक केबिन का वातावरण सुगंधित हो गया... सामने देखा एक छोटे कद का गोरा-चिट्ठा व्यक्ति कुर्सी पर विराजमान है। किसी विदेशी इत्र की भीनी-भीनी खुशबू के बीच मंद-मंद मुस्काते हुए उसने अपना विजिटिंग-कार्ड बढ़ाया। रंगीन कार्ड में लिखे हुए अक्षर भी रंगीनियां बिखेर रहे थे...

“दास राम शर्मा... चार्टर्ड अकाउंटेंट... समाज सेवी, पत्रकार...”

अभी मैं कार्ड से उनका परिचय जानने की कोशिश कर ही रहा था कि उन्होंने कहना शुरू किया... वैसे तो चार्टर्ड अकाउंटेंट की अपनी फर्म है पर मैं आपको डिपॉजिट के लिए भी मदद कर सकता हूँ। ऋण के लिए भी अच्छी पार्टियों से मिलवा दूंगा...

और भी कुछ बातें हुई... मुझे इस अनजाने जगह पर कोई शुभाकांक्षी तो मिला ऐसा सोचते हुए दिल को तसल्ली हुई, अन्यथा दास बाबू ने तो निराश और हतोत्साह ही किया था, यद्यपि उनकी कुछ बातें सही थीं।

इस ब्रांच को खुले महज चार साल हुए हैं जबकि तीन मैनेजर बदल चुके हैं... कोई सिफारिश से गया, तो किसी को मैनेजमेंट ने संतोषजनक परफॉरमेंस के अभाव में हटा दिया। फलस्वरूप ब्रांच की प्रगति बाधित हुई है। लगातार तीन साल से ब्रांच घाटे पर है। मैनेजमेंट ने भी इस ओर कोई ठोस कदम उठाया हो, ऐसा नहीं लगता। यह शाखा कितना उपेक्षित है इस बात से यह साफ जाहिर होता है कि यहाँ विगत चार वर्षों में एक भी उच्च-पदाधिकारी यहाँ तक कि आंचलिक कार्यालय का कम-से-कम कोई अधिकारी भी दौरे पर आया हो। दास जी ने शायद इसी बात को ध्यान में रख कर कहा होगा कि मेरा भी समय औरों की तरह यूँ ही कट जाएगा। ठीक ही तो कहा था। पर कहने का लहजा ठीक नहीं था, जो मेरे दुःख का कारण बना। मन-ही-मन मैंने इसे चुनौती के रूप में स्वीकार किया और समय आने पर दास जी को उचित जवाब दूंगा, ऐसा मैंने प्रण किया। मुझे विश्वास था कि मैं शर्मा जी के सहारे शाखा को सही दिशा देने में कामयाब हो जाऊंगा। पता नहीं क्यों शर्मा जी के व्यवहार से वे मुझे इतनी जल्दी विश्वसनीय लगने लगे। मैं आशावादी था कि शर्मा जी मुझे एक ऊर्जा-स्रोत के रूप में मिले।

परंतु यह विश्वास ज्यादा टिक नहीं पाया। समय बीतता गया पर शाखा की प्रगति के लिए मेरा योगदान शून्य रहा। हर हफ्ते ‘फ्राइडे-फिगर’ पर आंचलिक प्रबंधक की अच्छी-खासी डांट पड़ने लगी। काम कुछ भी नहीं हो रहा था। शर्मा जी जो भी ऋण का प्रस्ताव लाते थे उनमें कोई-न-कोई

कमी रहती ही थी। मैंने देखा बैलेंस शीट के जोड़-तोड़ में वे बेहद माहिर थे। डिपॉजिट की बात पर वे कहते कि अमुक ऋण की मंजूरी हो जाने पर आ जाएगा वगैरह-वगैरह। पर उनके द्वारा लाया गया ऋण का कोई भी प्रस्ताव फिजिबल नहीं था। मुझे एक दुश्चक्र में फंसाने का षड्यंत्र किया जा रहा था। मैं चौकन्ना था, मैं उन्हें समय पर पहचानने में सफल हो पाया था। अंततः मुझे झांसा देने में वे सफल नहीं हुए। यहाँ तक कि प्रस्तावित पार्टियों की तरफ से मुझे पैसों का लालच भी देने की कोशिश की गई। जब बात नहीं बनी तो धीरे-धीरे उन्होंने मुझसे कन्नी काट ली। मुझे गंगा नहाने का-सा संतोष हुआ। बड़ी मुश्किल से छुटकारा जो मिला था शर्मा जी से अन्यथा मैं उनके चंगुल में जकड़ता जा रहा था। किसी बड़े अघटन से मुक्ति तो मिली पर शर्मा जी के द्वारा शाखा के लिए बिजनेस देने के कोरे आश्वासन से तकलीफ भी हुई। मेरी आशा निराशा में बदल गई।

मुझे फिक्र थी कि कहीं मेरे पूर्व पदाधिकारियों की तरह मैं भी कहीं शाखा की प्रगति में बिना किसी योगदान के चलता बनूँ। मेरा भी परिहास हो यह मुझसे सहा नहीं गया। दास जी की कटाक्ष टिप्पणी मेरे दिमाग में गूँजने लगी। क्या सचमुच मैं कामयाब नहीं हो पाऊँगा, धीरे-धीरे हीन भावनाओं से मैं ग्रस्त होने लगा था।

लेकिन दास जी की आलोचना में ब्रांच की बिगड़ी हालत, निकृष्ट ग्राहक-सेवा और अनुशासनहीनता जैसे मुद्दे मुझे सकारात्मक लगे। उस पर काम करना मेरी प्राथमिकता थी। तब मैं अकेला ही था। ब्रांच का कार्य अनियमित था। जल्दी आकर “बैलेंस-टैली” करने में लग जाता था, जोकि काफी दिनों से लंबित था। शाखा में अनुशासन का माहौल तैयार करने में लग गया। ग्राहक को त्वरित और संतोषजनक सेवा देने के लिए हिदायत दी। धीरे-धीरे ब्रांच के प्रति सभी कर्मचारियों को समर्पित सेवा प्रदान करते हुए पाया।

एक दिन शाखा में मेरे आने से पहले मेरे केबिन में मैंने दास जी को बैठा पाया... चेहरे में झुंझलाहट थी, रोष था। सामने मेरे टेबल पर पानी का खाली गिलास और चाय की प्याली थी। सफाई कर्मचारी के आशा के विपरीत मैं उस दिन जल्दी आया था। मुझे देखते ही अपने काम को छोड़कर उसने जल्दी से मेरे टेबल को साफ किया। संभवतः उस कर्मचारी ने ही उन्हें चाय-पानी से नवाजा होगा। मुझे संशय हुआ कि आखिर ऐसी आवभगत उसने क्यों की, जबकि निरंतर वे सभी कर्मचारियों को कोसते रहते हैं। खैर, मैंने भी दुआ-सलाम की और विनम्रता पूर्वक उनसे कैश खोलने की अनुमति लेते हुए चाभी लेकर स्ट्रांग-रूम की तरफ बढ़ गया। मौके की आड़ में मुझे मेरे कर्मचारी ने बताया कि दास जी तिलमिलाए हुए हैं क्योंकि उनके खाते से पिछले महीने दो हजार रूपए निकले हैं, जोकि उनकी अज्ञानता में हुई है। उन्होंने नहीं निकाला है। हमारी संभावित भूल के कारण मैंने भयभीत होकर उन्हें चाय-वाय पिला कर शांत रखने की कोशिश की है। मेरे कर्मचारी की इस सूझ-बूझ से मैं बड़ा ही प्रेरित हुआ।

मैंने उन्हें उस दिन का वाउचर निकाल कर उन्हें वह निकासी पर्ची दिखाई। महोदय, उन्होंने गौर से देखा और मान लिया कि लिखाई और हस्ताक्षर स्वयं उनकी ही हैं। वे संतुष्ट होकर चले गए। फिर करीब दो घंटे के बाद मेरे सामने नोटों का एक पुलिंदा ला कर रख दिया। दो लाख रूपए थे। आश्चर्य से मेरी आँखें फटी की फटी रह गईं। अपने खाते में जमा करने के लिए कहा। उन दिनों वह राशि मायने रखती थी। मैंने आभार प्रकट किया।

धीरे-धीरे उनके सभी खाते, जो अन्य किसी दूर-दराज के बैंकों में थे, हमारी शाखा में अंतरित कर दिया। उनके सगे-संबंधियों के खाते भी खोले। वहां के लोग-बाग हमारे बैंक में अपनी रूचि दिखाई। व्यापारियों और दुकानदारों के व्यापार-संबंधित जरूरतों को ध्यान में रखते हुए ऋण भी दिए गए। शाखा का 'ग्राहक-आधार' बढ़ा। ब्रांच के व्यापार में सर्वांगीण विकास हुआ।

इसका सारा श्रेय दास जी को देने में मुझे कोई कुंठा-बोध नहीं है। उनकी निंदा ने ही हमें कुछ करने का बल दिया। दरअसल उन्होंने बड़ी कोशिश की थी कि ब्रांच उनकी जगह पर खुले। पर ब्रांच खोलने से संबंधित कुछ निर्धारित मापदंड में कमी के कारण उनका प्रस्ताव रद्द हो गया जोकि उनके असंतोष का कारण बना। वे मीन-मेख निकालने लगे और हमने हमारी उन गलतियों से सीख ली और यथा-साध्य कोशिश कर शाखा को विकास की पटरी पर लाया। शाखा चल पड़ी।

दरअसल हम झूठी प्रशंसा के चकाचौंध में बर्बाद तो हो जाते हैं पर आलोचना से घबरा जाते हैं... कुंठा बोध करते हैं। वस्तुतः आपकी आलोचना करने वाला ही सच्चे अर्थों में आपका हिताकांक्षी होता है अन्यथा बेवजह आपको सराहने वाले सैकड़ों मिल जाएंगे... कुछ तो कुछ पाने की आशा में तो कुछ बेमकसद, यूं ही। अगर सकारात्मक सोच रखें तो हम पाएंगे कि आलोचना हमें अपनी कमजोरियों से अवगत कराती है। वास्तविक आलोचना ही वह निःशुल्क स्रोत है जिससे अपने आप को हमें सुधारने का मौका मिलता है।

कबीर दास ने ठीक ही तो कहा है:-

“निंदक नियरे राखिए आँगन कुटी छवाय,

बिनु पानी साबुन बिना निर्मल करे सुभाय।”

आप भी अपने इर्द-गिर्द अपने निंदकों को पहचानें, जरूरत पड़े तो उन्हें लालच देकर अपने आस-पास रखें... वह आपकी निगरानी करेगा... आपकी कमियों को गिनाएगा... परोक्ष रूप में वह उन गलतियों से आपको सावधान कराएगा। इसका फायदा उठाकर आप अपने आप को सुधार लें, वो भी बिना किसी एवज के....

सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई-दुर्ग, छत्तीसगढ़ द्वारा हमारे बैंक की शाखा- सेक्टर-6, भिलाई को राजभाषा कार्यान्वयन के अनुपालन के लिए सर्वोत्कृष्ट पुरस्कार प्राप्त हुआ।

नराकास उपसमिति



बैंक नराकास भिलाई द्वारा हमारे बैंक की शाखा भिलाई को राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। शाखा में कार्यरत समस्त स्टाफ राजभाषा शील्ड तथा प्रमाण-पत्र के साथ।

प्रधान कार्यालय में बैंक के 112वें स्थापना

बैंक के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में बैंक के कार्यकारी निदेशक डॉ फरीद अहमद जी ने प्रधान कार्यालय के समस्त स्टाफ को संबोधित किया।



दिवस के आयोजन की कुछ झलकियाँ

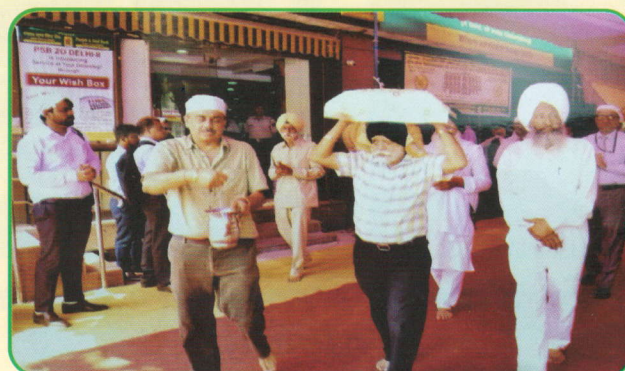
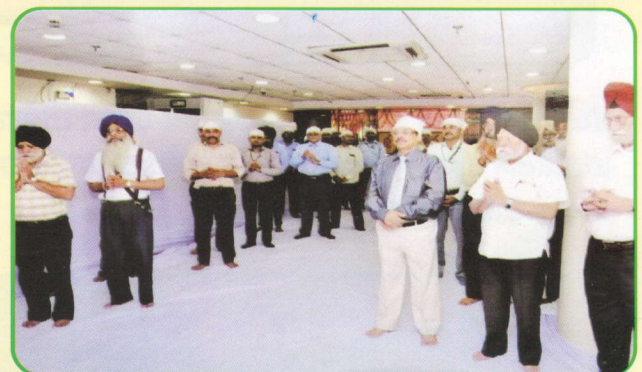
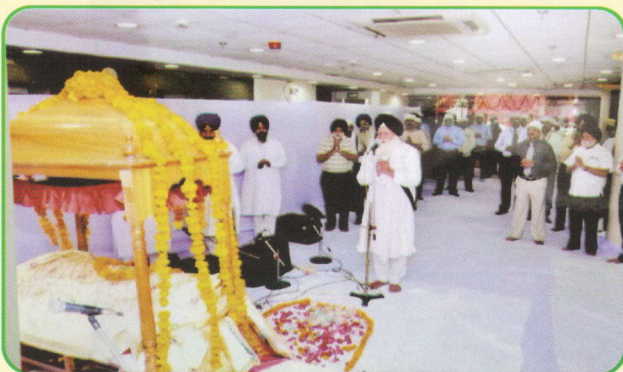
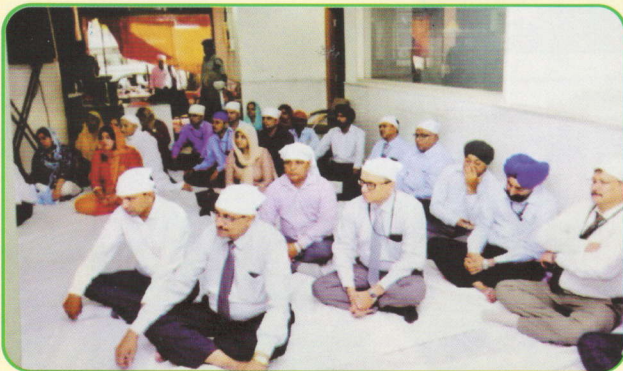


बैंक के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में प्रधान कार्यालय में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन माननीय कार्यकारी निदेशक डॉ. फरीद अहमद जी ने किया तथा प्रधान कार्यालय के स्टाफ सदस्यों ने बढ़-चढ़कर रक्त दान किया।



बैंक के स्थापना दिवस के अवसर पर औचलिक कार्यालय जयपुर में अरदास की गई और छबील का आयोजन भी किया गया।

प्रधान कार्यालय स्तर पर आयोजित शहीदों के सरताज श्री गुरु अरजन देव जी



ਕੇ ਸ਼ਹੀਦੀ ਗੁਰੂਪਰਵ ਪਰ ਕੀਰਤਨ ਤਥਾ ਛਬੀਲ ਏਵੰ ਲੰਗਰ ਕਾ ਆਯੋਜਨ ਕੀਯਾ ਗਯਾ



धरती पर केवल तीन फीसदी पानी ही पीने योग्य है जिसमें से ग्लेशियरों और दक्षिणी ध्रुव में और केवल 0.6 नदियों, तालाबों इस्तेमाल स क त ।

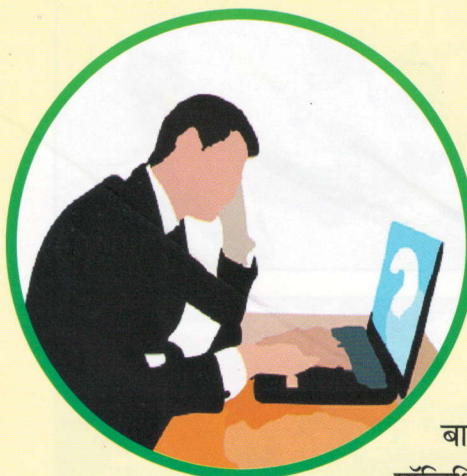


पानी बचाओ

2.4 प्रतिशत उत्तरी और जमा हुआ है प्रतिशत पानी झीलों और में है जिसे किया जा है।



प्रवीण कुमार,
शाखा गुरु का ताल, आगरा



ज़रा सोचिए ?

रोज सुबह 7.30 बजे बीच में स्वच्छ भारत एमसीडी की गाड़ी गली में कुत्ते लगते कि



से 8.00 बजे के का गीत गाते हुए सायरन बजाते हुए आती और गली के जोर-जोर से भोंकने



डॉ नीरू पाठक

बाहर आओ और अपने घर, गली और शहर को स्वच्छ रखो। लगभग सभी कूड़े का पॉलिथिन लिए बाहर आ जाते मानो कूड़ा गाड़ी का स्वागत करने को फूल माला लिए हों। ऊँची बिल्डिंग, मल्टी फ्लोर वाले घर, ऊपरी तल पर रहने वाले लोग ऊपर से कूड़ा फेंकते। मैं भी प्रथम तल पर रहती हूँ, ऊपर से ही कूड़ा फेंक कर जैसे विजय का अनुभव करती। लेकिन कुछ के ही निशाने सटीक होते, ज्यादातर तो मात ही खाते थे, और स्वच्छता अभियान धरा रह जाता। आज कुछ देर हो रही थी, तभी गाड़ी की आवाज आयी और मैं भी बाहर की ओर तेजी से गयी लेकिन कुछ क्षण की देरी से, कूड़ा फेंकने से पहले ही गाड़ी तो आगे निकल गयी और कूड़ा जमीन पर। लेकिन तभी मैंने देखा कि एक 15-16 साल का लड़का जो गाड़ी के पीछे-पीछे चल रहा था उसने कहा आंटी कोई बात नहीं और कूड़े का थैला गाड़ी में डाल दिया। मुझसे रहा नहीं गया, मैंने सॉरी बोला और पूछा कि तुम तो शर्मा जी को लड़के हो यहाँ कैसे। उसके जवाब ने मुझे निरुत्तर कर दिया। वो बोला आंटी आजकल मेरी छुट्टियाँ चल रही हैं, मैं रोज इस गाड़ी के पीछे-पीछे चलता हूँ यदि किसी का भी कूड़े का थैला गाड़ी में न गिरकर नीचे सड़क पर गिरता है तो मैं उसे उठाकर गाड़ी में डाल देता हूँ। कितना नन्हा सा प्रयास लेकिन कितना महत्वपूर्ण। मैंने उसे धन्यवाद कहा और उसकी प्रशंसा की, किंतु मन ही मन यह सोच लिया कि आइंदा मैं कूड़ा नीचे आकर ही गाड़ी में डालूंगी। मैंने तो सोच लिया, आप भी जरा सोचिए कि स्वच्छ भारत में आपका योगदान कितना है

प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग

नकदी रहित अर्थव्यवस्था एवं भारतीय अर्थव्यवस्था

मुद्रा के प्रादुर्भाव से पहले भारत की अर्थव्यवस्था वस्तु विनिमय आधारित अर्थव्यवस्था थी, जहां बाजार पूर्णतः वस्तु आधारित था। एक वस्तु खरीदने हेतु अन्य वस्तु का व्यय किया जाता था। इस व्यवस्था में किसी एक वस्तु या सेवा के बदले दूसरी वस्तु या सेवा का लेन-देन होता था तो इसे वस्तु विनिमय कहा जाता है। इस पद्धति में विनिमय की सार्वजनिक (सर्वमान्य) इकाई अर्थात् मुद्रा (रूपये-पैसे) का इस्तेमाल नहीं किया जाता है। यह व्यवस्था पूरी तरह नकदी रहित थी। यह प्रणाली हमारी प्राचीनतम प्रणाली है, यह हमारे सरल और संतोष कारक जीवन की पहचान है। उस समय जमीन की गुणवत्ता देखकर फसल उगाई जाती थी। अगर एक चावल की फसल बोता तो दूसरा उसके जमीन के अनुरूप, ज्वार, या अन्य कोई फसल बोता। सब्जी या दाल में डाले जाने वाले मसाले जैसे की मिर्च, हल्दी, लहसुन, प्याज, आदि भी खुद के ही खेत में बोये जाते। फसल जब पक जाती तो उसकी कटाई होती। यदि एक के पास चावल है और दाल नहीं दूसरे के पास दाल है पर चावल नहीं, तो वह एक दूसरे से समझौता कर के अन्न का आदान प्रदान करते। किंतु इस व्यवस्था में कई प्रकार की कमियां पाई गई। यह एकरूप लेनदेन नहीं था। इसे और अधिक समय तक जारी नहीं रखा जा सकता था। समय के साथ विभिन्न शासकों द्वारा मुद्रा की संकल्पना सामने आने जिसमें विभिन्न वस्तुओं के मूल्य के आधार पर प्रत्येक वस्तु की एक कीमत तय की गई। आज मुक्त बाजार व्यवस्था है जिसमें संपूर्ण विश्व एक पटल पर आकर व्यापार करता है।

वैसे तो माना जाता है कि मुद्रा का चलन भारत में मौर्य समाज से पहले ही आ गया था। किंतु उसका कोई स्थाई रूप देखने को नहीं मिला। जैसे-जैसे भारतीय शासक बदलते रहे वैसे-वैसे मुद्रा के स्वरूप में भी परिवर्तन आता चला गया। सबसे महत्वपूर्ण मौद्रिक परिवर्तन शेरशाह सूरी द्वारा किया गया। शेरशाह सूरी ने पूर्व में प्रचलित सोने के सिक्को को बंद करवाकर चांदी के सिक्कों को प्रचलन में लेकर आए तथा उसे 'रुपिया' नाम दिया गया। 'रुपिया' पूरे भारत में लोकप्रिय हो चुका था जिसमें आगे आने वाले शासकों ने कोई परिवर्तन नहीं किया। किन्तु सन् 1600 में अंग्रेजी शासकों ने आते ही इस मुद्रा का बदलने का बहुत प्रयास किया किंतु भारत में इसकी लोकप्रियता के कारण वह रुपिया का भारतीय अर्थव्यवस्था से निकाल नहीं पाए। किंतु अपनी मुद्रा को साथ-साथ चलाते रहे। 18वीं सदी तक आते आते अंग्रेजों की स्थिति मजबूत हो गई तथा उनका पश्चिम के साथ व्यापार बढ़ता गया अतः उनके द्वारा बैंकों की स्थापना की गई। सिक्कों के साथ समस्या यह थी कि इनका मूल्य सीमित था। अधिक सिक्कों को एक साथ संभालना बहुत मुश्किल हो रहा था। अतः अंग्रेजों द्वारा कागजी मुद्रा को प्रचलन आरंभ हुआ। पहला कागज का रुपया 18वीं सदी में बैंक ऑफ हिन्दोस्तान, जनरल बैंक ऑफ बंगाल एंड बिहार और बंगाल बैंक के द्वारा निकाला गया था। कागज वाली यह मुद्रा अपने साथ एक बड़ा बदलाव लेकर आई। कागज के यह नए नोट हिंदी, बंगाली और उर्दू भाषा में मुद्रित किए गये थे। इस लिहाज से इनकी उपयोगिता अलग-अलग जगह थी। माना जाता है कि यह आम जनता के लिए नहीं थे। 1935 में फिर 'रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया' का गठन किया गया, अब नोट को किसे कितना देना है। इसका निर्णय आरबीआई करती थी। 1938

में पांच रुपया का एक नोट निकाला गया। पांच के इस नोट पर भी किंग जार्ज का ही चित्र बना हुआ था। 1970 में महात्मा गांधी के जन्म शताब्दी स्मारक के तौर पर एक खास एक रुपए का नोट निकाला गया। थोड़े समय बाद 1996 में महात्मा गांधी के चित्र वाले नोटों की सीरीज निकाली गई। इन सबके बीच रुपए को थोड़ा छोटा करने की भी कोशिश की गई। पर वह ज्यादा नहीं चली। जैसे आना और पैसे जैसे सिक्कों को लाना। आना और पैसे थोड़े समय तो प्रचलन में रहे पर बाद में इन्हें बंद कर दिया गया। साथ ही एक रुपए को सबसे छोटी रकम की मुद्रा मान लिया गया। 2011 में रुपए के पुराने निशान को नए निशान से बदल दिया गया। 2016 में रुपए में एक और नया बदलाव आया है। 500 और 1000 के पुराने नोटों को सरकार द्वारा बंद कर दिया गया और 500 का नया नोट बाजार में आया 1000 के नोट को बदल कर उसकी जगह 2000 रुपए का नोट बाजार में लाया गया है, जो चलन में हैं। इस बड़े बदलाव को 'नोटबंदी' के नाम से जाना गया।



मलयद्री दूयारी

हमें पश्चिम के उन्नत देशों की तरह बिना नकदी के लेनदेन करना सीखना चाहिये। पर्स या बटुए का स्थान क्रेडिट-डेबिट कार्ड या मोबाइल फोन को मिलना चाहिये। नकदी के इस लेन-देन यानी कैशलेस अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए मोदी सरकार ने कई विशेष नीतियों की घोषणाएं भी की हैं।

यह सब सुनने में दूर के ढोल की तरह सुहावना तो लगता है, पर भारत जैसे विशाल देश में, जहां एक-तिहाई जनता अब भी निरक्षर है और 90 प्रतिशत से अधिक लेनदेन नकद-नारायण से होता है, यह क्रांति क्या बिना किसी भ्रांति के उस तेजी से हो सकती है, जिसकी सरकार अपेक्षा कर रही है?

देखते हैं पश्चिम के उन कुछ प्रमुख देशों का हाल, जो नकदी-मुक्त लेनदेन के अगुआ कहलाते हैं और भारत जिनका अनुसरण करना चाहता है।

नोटबंदी ने भारतीय जनमानस को नकदी रहित अर्थव्यवस्था से जुड़ने पर आमदा कर दिया। विश्व के कई देश नकदी रहित अर्थव्यवस्था बन चुके हैं जिनमें स्वीडन का नाम सबसे पहले आता है। स्वीडन का समाज स्वेच्छा से नकदी-मुक्त होता जा रहा है। रिक्सबांक का कहना है कि 2015 में वहां हुए सारे लेनदेन में नकदी का हिस्सा केवल दो प्रतिशत था। आने वाले कुछ सालों में यह घट कर केवल 0.5 प्रतिशत रह जाने की संभावना है। खुदरा लेनदेन में भी यहां केवल 20 प्रतिशत नकद पैसा हाथ बदलता है, जबकि पांच साल पहले यह अनुपात 50 प्रतिशत हुआ करता था। यदि पूरे विश्व के स्तर पर देखा जाये तो नकद लेनदेन की मात्रा इस समय 75 प्रतिशत है। यहां मोबाइल फोन से लेनदेन का फैशन तेजी से बढ़ रहा है। देश के प्रमुख बैंकों ने मिल कर 'स्विश' नाम का एक ऐसा साझा ऐप बनाया है, जो स्मार्ट फोन वालों के बीच तेजी से लोकप्रिय हुआ है।

बेल्जियम में भी नकदी रहित भुगतान का चलन तेजी से विकसित हुआ है। जनवरी 2014 से बेल्जियम में नियम है कि केवल 3000 यूरो तक का ही नकद लेन-देन हो सकता है। इससे अधिक का लेनदेन नकद-मुक्त होना चाहिये। इस कारण वहां 93 प्रतिशत लेनदेन में अब नकद भुगतान नहीं होता।

दरअसल आज विश्व के हर देश का कैशलेस होना मजबूरी नहीं बल्कि समय की मांग है। उपभोक्तावाद के जमाने में यह कदम सभी के लिए आगे की राहें आसान बनाएगा। कैशलेस समाज की स्थापना से देश के हर एक नागरिक को आगे आने वाले समय में फायदा होगा। भारत के मामले में यह कदम थोड़ा चुनौतीपूर्ण जरूर है क्योंकि यहाँ की 70% आबादी अभी भी गावों में रहती है जो कि इतनी पढ़ी लिखी भी नहीं है कि आसानी से कैशलेस लेनदेन कर सके और उनके पास मल्टीमीडिया मोबाइल के साथ-साथ इंटरनेट भी नहीं है। इसलिए भारत के परिपेक्ष्य में यह कदम चुनौतीपूर्ण जरूर है लेकिन असंभव बिलकुल नहीं। नकदी रहित अर्थव्यवस्था की स्थापना के लिए आवश्यक होगा कि बैंकों के लिए त्वरित नकद अंतरण हेतु व्यवस्था की जाए। 1980 के दौर में चेक, डिमांड ड्राफ्ट या अन्य पेपर आधारित सुविधाओं का इस्तेमाल किया जाता था जिसका मैनुअल क्लियरेंस होता था और इसमें एक सप्ताह से कहीं अधिक समय लग जाता था।

इसी आलोक में 1982 में रिजर्व बैंक ने मैगनेटिक इंक कैरेक्टर रिकॉग्निशन तकनीक को अपनाया जिससे एक विशिष्ट फॉर्मेट में चेक को पढ़ना एवं उसका क्लियरेंस संभव हो सका। कंप्यूटर मार्किंग के कारण यह प्रक्रिया आसान हुई और इसे इलेक्ट्रॉनिक भुगतान-व्यवस्था की दिशा में पहले कदम के रूप में देखा जा सकता है। फिर बैंकिंग व्यवस्था के कम्प्यूटरीकरण की दिशा में पहल की गयी।

फिर 1980 के दशक के मध्य में रिजर्व बैंक के तत्कालीन डिप्टी-गवर्नर सी. रंगराजन की अध्यक्षता में विशेषज्ञ दल ने एटीएम के जरिये कैश-डिलीवरी का सुझाव दिया। रिजर्व बैंक ने इस दिशा में चरणबद्ध तरीके से बढ़ने का निर्णय लिया। इसी आलोक में पहले अन्तःबैंक ई-अंतरण की दिशा में पहल की गयी और क्लियरिंग हाउस के प्रचालन को सम्बद्ध करने का प्रयास किया गया। बैंकों के बीच फण्डों के अंतरण हेतु सुविधा-प्रदायन के लिए बैंकनेट की दिशा में पहल की गयी एवं अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संदेशों के आदान-प्रदान के लिए स्विफ्ट व्यवस्था की शुरुआत की गयी। इसी समय सी. रंगराजन की अध्यक्षता में विशेषज्ञ दल ने कारोबारी समूहों के बीच व्यापक रूप से स्वीकार्य 'सभी बैंकों के लिए एकल क्रेडिट कार्ड' व्यवस्था का सुझाव दिया ताकि बैंकों पर चेक क्लियरेंस के दबाव एवं नकदी की मांग को कम किया जा सके। फिर, 1990 के दशक के मध्य में निजी बैंकों द्वारा एटीएम की दिशा में पहल की गयी जिन्होंने बैंक शाखाओं की सीमितता के मद्देनजर नए उत्पादों और ग्राहकों तक बेहतर एवं आसान पहुँच सुनिश्चित करने के लिए तकनीक में निवेश को प्राथमिकता दी। इसी समय रिजर्व बैंक ने ई-ट्रान्सफर की व्यवस्था शुरू की। 1992 के प्रतिभूति घोटाले के बाद प्रतिभूतियों के लेन-देन के निपटारे के लिए डिलीवरी वर्सेस पेमेंट व्यवस्था की दिशा में पहल की गई। 1998-99 में विशेष रूप से किसानों के लिए किसान क्रेडिट कार्ड इंट्रोड्यूस किया गया।

कहा जाता है कि इसके जरिये ग्रामीण अर्थव्यवस्था में नकदी-रहित

लेन-देन को प्रोत्साहित करने की भी कोशिश की गई, लेकिन इसका उद्देश्य ग्रामीण अर्थव्यवस्था में नकदी-रहित लेन-देन को प्रोत्साहित करने के बजाय किसानों की क्रयक्षमता में वृद्धि के लिए आसान शर्तों पर ऋण उपलब्ध कराना था ताकि वे किसानों से सम्बंधित अपनी आवश्यकता को पूरा कर सकें।

रिजर्व बैंक ने वी-सैट का इस्तेमाल करते हुए इलेक्ट्रॉनिक-लिंक बैंकों का नेटवर्क तैयार किया और इसी की पृष्ठभूमि में रियल टाइम ग्राँस सेटलमेंट और नेशनल इलेक्ट्रॉनिक फण्ड ट्रान्सफर की दिशा में कदम बढ़ाया। 2004 में एटीएम से होने वाले लेन-देन को शुल्क-मुक्त किया गया। आगे चलकर रुपे कार्ड जारी किया गया जिसका उद्देश्य वीजा एवं मास्टर कार्ड जैसे सेवा-प्रदाताओं के भुगतान-शुल्क को कम करना था। मार्च 2012 में नेशनल पेमेंट कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया ने भारतीय घरेलू कार्ड स्कीम के रूप में वीजा कार्ड एवं मास्टर कार्ड के विकल्प के रूप में डेबिट कार्ड के भारतीय वर्जन रुपे कार्ड लांच किया और मई, 2014 में इसे देश को समर्पित किया। वीजा एवं मास्टर कार्ड के जरिये होनेवाले लेन-देन की प्रोसेसिंग देश से बाहर होती है, जबकि रुपे कार्ड के जरिये होनेवाले लेन-देन की प्रोसेसिंग देश से भीतर। इसीलिये रुपे कार्ड के जरिये होनेवाले लेन-देन की प्रोसेसिंग भी आसान एवं तेज होती है और उसकी लागत भी अपेक्षाकृत कम होती है। अप्रैल, 2016 में वर्चुअल पहचान के साथ ई-ट्रांजिक्शन के लिए यूनिकाइड पेमेंट इंटरफेस नामक एप जारी किया गया और विभिन्न प्रकार के बिल-भुगतानों के लिए एकीकृत व्यवस्था के रूप में भारत बिल पेमेंट सिस्टम प्रस्तावित है। इस तरह नकद रहित अर्थव्यवस्था की दिशा में की गयी अब तक की पहल इस दिशा में पहल के लिए आधार तैयार किया। डिजिटल भुगतान के कारोबार को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार के द्वारा कई नीतिगत पहलों की गईं और कई प्रोत्साहन दिए गए, पर निर्णायक सफलता नोटबंदी को ही मिलती दिखी। यूपीआई ऑनलाइन भुगतान की व्यवस्था है जो स्मार्टफोन के जरिये दो लोगों के बीच तत्काल प्रभाव से फण्ड के ट्रान्सफर को सुनिश्चित करता है। इसका इस्तेमाल फंड भेजने और प्राप्त करने, दोनों के लिए किया जा सकता है।

वर्तमान ऑनलाइन भुगतान व्यवस्था, नेशनल इलेक्ट्रॉनिक फण्ड ट्रान्सफर, रियल टाइम ग्राँस सेटलमेंट या फिर तत्काल भुगतान सेवा में ग्राहक को बैंक की वेबसाइट पर अपना पंजीकरण कराना होता है, लाभान्वितों को उससे जोड़ना होता है और बैंक अकाउंट से सम्बंधित जानकारी को साझा करना होता है साथ ही, मौजूदा व्यवस्था के अंतर्गत बैंकिंग कार्यघंटों के बाद या फिर छुट्टी के दिनों में फण्ड ट्रान्सफर करना बाधित है।

इससे भिन्न यूपीआई के अंतर्गत विभिन्न बैंकों द्वारा जारी यूपीआई एप डाउनलोड करना होता है, जिसमें अपने से सम्बद्ध विशेष जानकारीयों पंजीकृत करवानी होती हैं और एक आभासी एड्रेस सृजित करना होता है। फिर इसके जरिये इस प्रकार के यूनिक एड्रेसवाले प्राप्तकर्ता के आग्रह पर एक लाख रुपये तक के फण्ड का बैंक की अनुमति से तत्काल अंतरण किया जा सकता है। यह सुविधा साल भर और चौबीसों घंटे उपलब्ध रहती है। यूपीआई ग्राहकों को बिना अतिरिक्त बैंकिंग सूचना के ऑनलाइन और ऑफलाइन, दोनों ही मोड में बैंक खातों से सीधे कारोबारी को भुगतान करने की अनुमति प्रदान करता है इसके लिए ग्राहक को न तो क्रेडिट कार्ड डिटेल देने की जरूरत होती है, न ही इंडियन फाइनेंसियल

सिस्टम को और न नेट बैंकिंग या वॉलेट पासवर्ड की आवश्यकता होती है। अब कई बैंकों के यूपीआई एप्प डाउनलोड आसानी से डाउनलोड किए जा सकते हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी और इलेक्ट्रॉनिक के बढ़ते प्रयोग से बैंकिंग में युगान्तकारी परिवर्तन आ रहे हैं। इंटरनेट की सुविधा से आप आज घर या आफिस में बैठे हुए हवाई यात्रा की बुकिंग, रेलवे की बुकिंग करा सकते हैं। अब इंटरनेट का प्रयोग निधियों को एक खाते से दूसरे खाते में अंतरण करने, विभिन्न प्रकार के भुगतान करने के अलावा बैंकिंग की निपटान और भुगतान प्रणाली में भी काफी सीमा तक होने लगा है। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर निधियों के अंतरण अब इंटरनेट से होने लगे हैं। यह न केवल एक ही नगर में स्थित बैंकों में वरन् अन्य शहरों के बीच तथा अन्य देशों के बीच निधियों के अंतरण का एक महत्वपूर्ण साधन बन कर उभरा है। यह देशी तथा विदेशी बैंकिंग के बीच एक सहज और उपयोगी एवं सार्थक सेतु का कार्य कर रही है। इससे न केवल भुगतान एवं निपटान में तेजी आई है बल्कि इससे विश्वसनीयता भी बढ़ी है। फोन एवं मोबाइल बैंकिंग ने जहाँ एक जगह पर आंकड़ों का संचयन कर दिया जाता है और आप अपने फोन पर ही अपने खातों की स्थिति का पता लगा सकते हैं, उसमें राशि का अंतरण या नामे कर सकते हैं। साथ ही कहीं बैठे आप फोन के जरिए बैंकिंग कारोबार कर सकते हैं। इसमें बैंक की सभी शाखाओं को आंतरिक इंटरनेट के जरिए जोड़ दिया जाता है। 'कोर बैंकिंग' इस दिशा में नवीनतम प्रयोग है। कितनी सिमट गयी दूरियाँ और कितना नजदीक आ गया है।

नकदी रहित अर्थव्यवस्था के अपने फायदे हैं। डिजिटल भुगतान नकदी पर निर्भरता को कम करेगा जिससे वित्तीय लेन-देन लागत भी कम होगी तथा पारदर्शिता सुनिश्चित की जा सकेगी। साथ ही, इसके कारण आर्थिक अपराधों और गली मोहल्लों में होने वाली छीना झपटी जैसे अपराधों में कमी आएगी। आनेवाले समय में यूजर्स की सुविधा और उससे सम्बंधित आंकड़ों की सुरक्षा का प्रश्न महत्वपूर्ण होने जा रहा है।

इससे वित्तीय लेनदेन में वृद्धि आएगी एवं राजस्व कर में पारदर्शिता आएगी जो कराधार में विस्तार सुनिश्चित करेगा। अक्सर छोटे एवं मझोले कारोबारी के साथ-साथ उपभोक्ता सेवा कर, बिक्री कर, वैट एवं अन्य अप्रत्यक्ष करों व शुल्कों से बचने के लिए नकदी का इस्तेमाल करते हैं। अगर जीएसटी व्यवस्था को सफल होना है, तो इस मानसिकता में बदलाव अपेक्षित है। नकदी रहित अर्थव्यवस्था के इस बदलाव के मार्ग को प्रशस्त करता हुआ जीएसटी व्यवस्था की सफलता का मार्ग प्रशस्त करेगा और इसका सर्वाधिक लाभ राज्य को मिलेगा और राज्य कर की दरों में कमी के जरिये उस लाभ को उपभोक्ताओं तक पहुँचाने की कोशिश करेगा।

नकदी रहित अर्थव्यवस्था का लाभ वित्तीय पूंजी को भी मिलने की संभावना है। अब तक कामकाजी वर्ग की बचत और साख संबंधी जरूरतों तक वैश्विक पूंजी की पहुँच संभव नहीं हो पाई है। लेकिन, नकदी रहित अर्थव्यवस्था अनौपचारिक क्षेत्र के लेनदेन के लिए मार्ग तैयार करती हुई अनौपचारिक क्षेत्र की और मार्ग प्रशस्त करती है ताकि अनौपचारिक क्षेत्र की पूंजी तक उसकी पहुँच संभव हो सके।

नकदी रहित अर्थव्यवस्था की ओर भारत के मार्ग में अवसरचरणात्मक

अवरोध के रूप में कई प्रकार की चुनौतियाँ मौजूद हैं। डिजिटल लेनदेन हेतु स्मार्ट फोन की आवश्यकता होती है जबकि आज भी भारत की अधिकतर आबादी फीचर फोन पर ही निर्भर है। भारत में इलेक्ट्रॉनिक इंफ्रास्ट्रक्चर स्पेस अब भी अल्पविकसित अवस्था में है जिससे लेनदेन में नकदी की महत्वपूर्ण बने रहने की संभावनाएं अधिक हैं।

भारत में बैंकिंग शाखाओं एवं एटीएम के शहरी-ग्रामीण क्षेत्रों में वितरण और लोगों तक इसकी पहुँच पर नजर डालें, तो स्थिति विषम दिखाई पड़ती है। इसके अतिरिक्त सामान्यतः विकसित देशों के द्वारा एटीएम मशीनों को हर पांच वर्ष पर बदल दिया जाता है, जबकि भारत में दस वर्ष से अधिक समय लग जाते हैं और पुराने एटीएम मशीनों को नष्ट करने के बजाय दूरवर्ती क्षेत्रों में लगा दिया जाता है। इसके कारण जोखिम बढ़ जाते हैं। डेबिट/क्रेडिट कार्ड का प्रयोग ग्रामीण तथा निम्न वर्गीय/अनपढ़ व्यक्तियों द्वारा न के बराबर किया जाता है। ग्रामीण एवं अर्ध-शहरी क्षेत्रों में पॉइंट ऑफ सेल मशीनों की उपलब्धता सीमित है। जिन कारोबारियों के पास इसकी उपलब्धता है भी, उनके द्वारा नकदी लेन-देन पर छुट्टें दी जाती हैं और डिजिटल भुगतान पर अतिरिक्त शुल्क वसूला जाता है, जो डिजिटल लेन-देन को हतोत्साहित करता है। इतना ही नहीं, भारत में दो कारणों से क्रेडिट एवं डेबिट कार्ड से लेन-देन भी सुरक्षित नहीं है: एक तो कार्ड के पीछे सीवीवी नंबर की मौजूदगी, जिसे पीओएस मशीनों पर इस्तेमाल के दौरान या फिर कार्ड-चोरी की स्थिति में कोई भी देख सकता है, और दूसरे, कई बार कार्ड को पीओएस मशीनों के साथ कंप्यूटर से भी स्वैप किया जाना। ये दोनों ही स्थितियाँ यूजर्स की वित्तीय एवं डिजिटल निरक्षरता की पृष्ठभूमि में इसके बेजा इस्तेमाल की संभावनाओं को बल प्रदान करती हैं।

इन सबके अतिरिक्त भारत के सामने मौजूद सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण चुनौती है लोगों की पारंपरिक मानसिकता को बदलने और साथ ही बदलाव के प्रति उनके प्रतिरोध की, इस बदलाव के लिए निरक्षरता एवं डिजिटल निरक्षरता भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है, इस आलोक में देखें तो बुजुर्ग वर्ग, दिव्यांग, अशिक्षित और अर्ध शिक्षित जनता को मोबाइल तकनीकी का प्रयोग करने लायक बनाना मामूली बात है। लेकिन छोटे नगरों एवं शहरों के कारोबारी डिजिटल लेन-देन को समझ पाने की स्थिति में नहीं हैं और इसीलिए वे ऐसा करने से हिचक रहे हैं।

यह सारा अतिवाद यदि न भी हो, तब भी भारत जैसे देश में नकदी रहित व्यवस्था की अपनी दिक्कतें हैं। यहां बिजली का कोई भरोसा नहीं रहता। जब-जब बिजली चली जायेगी, बैंक से लेकर ग्राहक तक कोई कुछ नहीं कर सकता। यदि बिजली सदा रहे भी, तब भी नकदी-मुक्त समाज में बैंकों में सारे काम कंप्यूटरों पर स्वचालित ढंग से होंगे। कैशियर और बहुत सारे क्लर्क बेकार हो जायेंगे। केवल ऋण, बांड या शेयरों संबंधी परामर्श देने के लिए इक्के-दुक्के लोग रह जायेंगे। एक दिन ऐसी भी स्थिति आ सकती है कि सारे बैंक तिरोहित हो जायें और पूरे देश में केवल कोई एक ही केंद्रीय बैंक कंप्यूटरों और रोबोट मशीनों के सहारे सारी वित्त प्रणाली चला रहा हो। जब पैसे का ही कोई भौतिक अस्तित्व नहीं होगा, तब आज के लाखों बैंक कर्मचारियों के अस्तित्व का भी भला क्या औचित्य बचेगा।

स्टाफ ट्रेनिंग कॉलेज, रोहिणी

योग के दार्शनिक एवं सामाजिक महत्व

योग भारत की विरासत है। लोक जीवन से लेकर प्राचीन ज्ञान परंपरा तक अमूल्य निधि है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 27 सितम्बर, 2014 को संयुक्त राष्ट्र के सामने अपने पहले संबोधन में एक प्रस्ताव पेश किया कि संयुक्त राष्ट्र को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में एक दिवस के निर्धारित करने पर विचार करना चाहिए। आश्चर्यजनक रूप से पहली बार किसी प्रस्ताव को 177 देशों ने अपना समर्थन दिया। तब जाकर संयुक्त राष्ट्र संघ ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने की घोषणा की। तब से योग को न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतर्राष्ट्रीय फलक तक मान्यता मिल गई है। जैसा कि हम सभी जानते हैं महर्षि पतंजलि ने व्यापक अनुसंधान और परिश्रम से योगसूत्र की रचना की थी। वास्तव में योग वह विद्या है, जो शरीर के अंगों की गतिविधियों और सांसों को नियंत्रित करता है। यह शरीर और मन दोनों को प्रकृति से जोड़कर आंतरिक और बाहरी ताकत को बढ़ावा देती है।

यह केवल शारीरिक क्रिया नहीं है। वरन शरीर को स्वस्थ रखता है वजन कम करता है। योग की सबसे प्रभावशाली विद्या है सूर्य नमस्कार, जिससे शरीर में लचीलापन आता है। शरीर की अकड़न जकड़न में आराम मिलता है।

योग से मन एकाग्रचित रहता है। इसमें शीतलता का भाव आता है और चिंता जैसे विकारों का अंत होता है। योग नियमित रूप से करने से मन शांत रहता है। मन और मस्तिष्क के शांत होने से सकारात्मक विचार का प्रवाह होता है। यही सकारात्मक भाव जीवन के प्रति नजरिया बदल देता है। योग से मनोबल बढ़ता है।

जीवन के हर क्षेत्र में हर परिस्थिति में चुनौतियों का मुकाबला करने का साहस योग से आता है। हम दैनिक क्रिया-कलापों और गतिविधियों से जब थक जाते हैं उस परिस्थिति में योग ऊर्जा का संचार फिर से करता है। इस तरह की सैकड़ों

विशेषताओं के कारण ही योग को दुनिया ने पसंद किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने संबोधन में ठीक ही कहा था कि योग जीरो बजट का हेल्थ इंश्योरेंस देता है इसलिए लोगों को योग को जिंदगी का हिस्सा बनाना चाहिए। यह तन, मन और आत्मा को शुद्ध करता है। इंसान का मन कभी स्थिर नहीं रहता, लेकिन योग मन और शरीर को स्थिरता देता है।



विभाष कुमार

आज पूरे विश्व के देश योग को अपना रहे हैं। विश्व के मुस्लिम, ईसाई पंथ बहुल देश भी बढ़-चढ़कर योग को अपने-अपने देश में इसका मतलब है कि योग का जादू सिर चढ़कर बोल रहा है। योग पिछले दो सालों में रोजगार के बड़े क्षेत्र के रूप में उभरा है। योग के माध्यम से हजारों नौकरियां देश विदेश में उपलब्ध हो रही हैं। क्या हमारे पास सच में इतने योग प्रशिक्षक हैं, जो योग पढ़ा सकें, सिखा सकें। योग का कारोबार भी हजारों लाखों करोड़ों का होता जा रहा है, क्या हम इन नए बाजारों में अपनी हिस्सेदारी सुनिश्चित कर पाएंगे।



21 जून को जब सारी दुनिया को अनुलोम-विलोम, कपालभाति, वज्रासन से लेकर पवन मुक्तासन तक दर्जनों आसनों को करता देखकर समूचा देश गौरवान्वित महसूस कर रहा था, वहीं देश में एक तबका योग के औचित्य और महत्व पर प्रश्नचिह्न लगा रहा था। मुझे लगता है, इस तरह की चुनौती महर्षि पतंजलि के जीवन काल में ही इस दर्शन का प्रवर्तन और स्थापित करते समय भी मिली होगी। शायद यही हमारी विमातावादी सोच और लोकतांत्रिक खूबसूरती है। बुद्ध भारतीय धर्म और दर्शन में योग का अत्यधिक महत्व है। आध्यात्मिक उन्नति या शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए योग की आवश्यकता व महत्व को

प्रायः सभी दर्शनों एवं भारतीय धार्मिक संप्रदायों ने एकमत व मुक्तकंठ से स्वीकार किया है। वैदिक, जैन और बौद्ध दर्शनों में योग का महत्व सर्वमान्य है। सविकल्प बुद्धि और निर्विकल्प पूजा में परिणित करने हेतु योग-साधना का महत्व सर्वमान्य स्वीकृत है। सविकल्प और निर्विकल्प क्या होता है इसे 'योग दर्शन' में देखा जा सकता है।

आधुनिक युग में योग का महत्व बढ़ गया है। इसके बढ़ने का कारण व्यस्तता और मन की व्यग्रता है। आधुनिक मनुष्य को आज योग की ज्यादा आवश्यकता है, जबकि मन और शरीर

अत्यधिक तनाव, वायु प्रदूषण तथा भागम-भाग के जीवन से रोगग्रस्त हो चला है।

आधुनिक व्यथित चित्त या मन अपने से भटक गया है। उसके अंतर्मुखी और बहिर्मुखी होने में संतुलन नहीं रहा। अधिकतर अति-बहिर्मुख जीवन जीने में ही आनंद लेते हैं जिसके परिणाम संबंधों में तनाव और अव्यवस्थित जीवनचर्या के रूप में सामने आया है।

दरअसल योग भविष्य का धर्म और विज्ञान है। भविष्य में योग का महत्व बढ़ेगा। यौगिक क्रियाओं से वह सब कुछ बदला जा सकता है।

पतंजलि ने इस ग्रंथ में भारत में अनंत काल से प्रचलित तपस्या और ध्यान क्रिया का एक स्थान पर संकलन किया और उसका तर्क सम्मत सैद्धांतिक आधार प्रस्तुत किया। यही संपूर्ण धर्म का सुव्यवस्थित वर्गीकरण है।

इस ग्रंथ के चार पाद हैं— 1 समाधिपाद 2 साधनापाद 3 विभूतिपाद 4 कैवल्यपाद।

1 समाधिपाद : योगसूत्र के प्रथम पाद 'समाधिपाद' में महर्षि पतंजलि ने योग की परिभाषा इस प्रकार दी है— 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोध'— अर्थात् चरित्र की वृत्तियों का नागिरोध करना ही योग है। मन में उठने वाली विचारों और भावों की श्रृंखला को चित्तवृत्त अथवा विचार-शक्ति कहते हैं। अभ्यास

द्वारा इस श्रृंखला को रोकना ही योग कहलाता है। इस अभ्यास में समाधि के रूप और भेदों, चित्रित तथा उसकी वृत्तियों का वर्णन है।

2 साधनापाद : योगसूत्रा के दूसरे पाद—'साधनापाद' में योग के व्यावहारिक पक्ष को रखा है। इसमें अविद्यादि पांच क्लेशों को सभी दुखों का कारण मानते हुए इसमें दुःख शमन के विभिन्न उपाय बताए गए हैं। योग के आठ अंगों और साधना विधि का अनुशासन बताया गया है।

3 विभूतिपाद : योग सूत्र के पाद तीन 'विभूतिपाद' में धरणा, ध्यान और समाधि के संयम और सिद्धांतों का वर्णन कर कहा गया है कि साधक को भूलकर सिद्धांतों के प्रलोभन में नहीं पड़ना चाहिए।

4 कैवल्यपाद : योगसूत्र के चतुर्थ पाद 'कैवल्यपाद' में समाधि के प्रकार और वर्णन को बताया गया है। पाद में कैवल्य प्राप्त करने योग्य चित्रित का स्वरूप बताया गया है साथ ही कैवल्य अवस्था कैसी होती है इसका भी जिक्र किया गया है। यहीं पर योग सूत्र की समाप्ति होती है।

महर्षि पतंजलि ने उत्तम, मध्यम एवं अधम—तीनों श्रेणी के साधकों के लिए निर्विष्ट किया है। उत्तम कोटि के साधकों के लिए भावना रूप ईश्वर प्राणिधन का उपदेश किया है। क्रिया योग के अन्तर्गत समान पाद के आरम्भ में ईश्वर प्राणिधन का उपदेश मध्यम कोटि के साधकों हेतु है तथा अष्टांग योग के अन्तर्गत जिस ईश्वर प्राणिधन का दर्शन है, वह अधम कोटि के साधकों हेतु है।

पतंजलि ने 'ईश्वर' का उदाहरण देते हुए कहा है— क्लेश कर्म, विपाक तथा आशय—से मुक्त होने वाला 'पुरुष विशेष' ही ईश्वर है अर्थात् जो पुरुष, क्लेश, कर्म, कर्मफल तथा वासनादि संस्कारों से मुक्त होता है, वही योग में ईश्वर कहलाता है। क्लेश पांच प्रकार के हैं—अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष तथा अभिनिवेश। शुभ



एवं अशुभ, विहित और निषेध भेद से कर्म दो प्रकार का है—कर्मफल भी अवश्य प्राप्त होता है, जो जाति, आयु एवं योग—तीन प्रकार के रूप धारण करता है। इसी को 'विपाक' कहते हैं।

योग सूत्र में पतंजलि ने विभिन्न प्रकार से ईश्वर की आराधना कर उसकी कृपादृष्टि प्राप्त करने के लिए साधकों को प्रेरित किया है, जिसके द्वारा अन्य साधनों की अपेक्षा साधकों को शीघ्र समाधिफल की प्राप्ति होती है। इसे ही ईश्वर प्राणिमान कहा है और प्रणव को ईश्वर का वाचक माना है। प्रणव शब्द से तात्पर्य है ईश्वर का जाप करना, उस जाप—काल में अभिधेय ईश्वर के विषय में चिन्तन, मनन करना। इसके द्वारा समाधिलाभ एवं मोक्ष दोनों प्राप्त होते हैं तथा साथ ही समाधिकाल में आने वाले विघ्न का भी नाश होता है।

गुरु के बिना ज्ञान का उपदेश असम्भव है। अतः सूत्रकार पतंजलि ने ईश्वर की काल द्वारा अबाधित होने के कारण पूर्वोत्पन्न गुरुओं का भी गुरु माना है। पूर्वोत्पन्न गुरुओं से तात्पर्य सर्ग के प्रारम्भ में उत्पन्न ब्रह्मा, विष्णु, महेशादि गुरुओं को माना है क्योंकि ज्ञान की धारा का मूल स्रोत ईश्वर को माना गया है तथा वही ज्ञानधारा जगत में प्रवाहित होकर जिज्ञासु जनों का मंगल सिद्धक है। अतएव ईश्वर की उपादेयता योग दर्शन में मौलिक है।

सूत्रकार ईश्वर को सर्वज्ञ मानते हैं। ईश्वर को ही किसी पदार्थ विशेष की त्रैकालिक अवस्थाओं का ज्ञान होता है। ईश्वर की सर्वज्ञता को निरतिशय माना जाता है परन्तु सर्वज्ञत्व नामक सिद्धि से युक्त योगी एवं ईश्वर की सर्वज्ञता में अन्तर केवल इतना है कि ईश्वर अनादि काल से सर्वज्ञ है, जबकि योगी पहले अज्ञानी था। ईश्वर सर्वाधिक ऐश्वर्यसम्पन्न है। निरतिशयता ईश्वर में ही सम्भव है।

ईश्वर की उपाधि से तात्पर्य उसके उपाधिभूत चित्त से है। ईश्वर की सत्ता में शास्त्र प्रमाण है अतः इस विषय में प्रत्यक्ष एवं अनुमान प्रमाण नहीं माना जा सकता, क्योंकि भाष्यकार व्यास भी शास्त्र ग्रन्थों को प्रमाण मानते हैं।

ईश्वर करुणावश सृष्टि में प्रवृत्त होता है। सूत्रकार एवं भाष्यकार दोनों ही इस मान्यता के संस्थापक हैं क्योंकि जिस प्रकार अग्नि स्वभाव से उष्ण है, ठीक उसी प्रकार भक्तों पर अनुग्रह करना भी ईश्वर का स्वभाव है। अतः ईश्वर को राग—द्वेष से युक्त नहीं कहा जा सकता है।

महर्षि पतंजलि ने ध्यान के लिए भी ईश्वर भक्ति को आवश्यक माना है तथा योग शास्त्र के टीकाकारों ने तो ईश्वर भक्ति को ही योग प्राप्ति का सर्वश्रेष्ठ साधन माना है। अतएव ईश्वर केवल ज्ञान का विषय न होकर सर्वश्रेष्ठ पुरुष भी है। वह सर्वगुण सम्पन्न, नित्य, सर्वव्यापी, सर्वद्रष्टा तथा सर्वशक्तिमान है।

चित्तवृत्ति उसका स्वरूप तथा उपाय वस्तुतः ज्ञान, इच्छा और संकल्प का नाम चित्त है। महर्षि पतंजलि ने 'चित्तवृत्ति' के निरुद्ध का नाम ही योग है' कहकर योग का लक्षण दिया है। प्रकृति में सत्त्व, रजस् तथा तमस् तीनों गुणों का सद्भाव रहता है। उनमें लाघव तथा प्रकाश स्वभाव वाले सत्त्वगुण के परिणाम विशेष को ही चित्त की संज्ञा प्रदान की गयी है। चित्त से तात्पर्य वाचस्पति मिश्र ने 'अन्तःकरण' को माना है, जो बुद्धि का उपलक्षक है। विज्ञानभिक्षु अन्तःकरण सामान्य को ही चित्त मानते हैं। उनके अनुसार अन्तःकरण वृत्तिभेद से भिन्न—भिन्न प्रतीत होने के कारण चार भेदों से युक्त है। ये चार भेद मन, बुद्धि, अहंकार तथा चित्त हैं, जिन्हें योगदर्शन में केवल एक नाम चित्त कहा है। मौजवृत्ति में चित्त के परिणाम विशेष को वृत्ति कहा गया है। आचार्य नारायणतीर्थ अन्तःकरण त्रय को चित्त मानते हैं। इस प्रकार विभिन्न व्याख्याकारों के मतों की विवेचना है मन, बुद्धि, अहंकार इन तीनों के सम्मिलित रूप को ही अन्तःकरण मानते हुए 'चित्त' पद का अभिप्राय समझना चाहिए। चित्त की विभिन्न अवस्थाएं ही चित्त की भूमियां कहलाती हैं, जो क्रमशः क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र एवं निरुद्ध— पांच प्रकार से निर्दिष्ट हैं। अर्थात् गुणों की विषमता के कारण चित्त में विविध प्रकार का परिणाम देखा जाता है।

1. क्षिप्त : क्षिप्त भूमि का अर्थ चंचलता है। त्रिगुणात्मक चित्त में रजोगुण प्रधान सत्य एवं तमोगुण गौणावस्था में रहते हैं, तब वह क्षिप्तावस्था होती है। रजोगुण का स्वभाव क्रियाशील है। इसीलिए क्षिप्तावस्था में चित्त विषयों की ओर आकृष्ट होता रहता है। वाचस्पति मिश्र इसे अत्यन्त स्थिर मानते हैं। जब तमोगुण सत्त्वगुण को दबा लेता है तथा अधर्म, विराग, अज्ञान, ऐश्वर्य में प्रवृत्त होती है।

2. मूढ़ : मूढ़ भूमि का अर्थ मूढ़ता है। यह तमोगुण प्रधानावस्था है। साथ ही निद्रादि वृत्तियों से युक्त है। अतः सत्त्व एवं रजस् दबे हुए से गौण रूप में रखते हैं। हरिहरानन्द आरण्य के अनुसार जो चित्त किसी इन्द्रिय विषय में सहज ही समाहित हो जाता है, चित्त की इस अवस्था में मनुष्य की प्रवृत्ति अज्ञान, अधर्म, राग तथा

अनैश्वर्य में होती है। यह व्यवस्था राक्षसादि की होती है—रामानन्दयति ऐसा मानते हैं।

3. विक्षिप्त : विक्षिप्त भूमि भी कुछ-कुछ विक्षिप्त के समान ही है तथा कभी स्थिर भी हो जाती है। वाचस्पति मिश्र ने कहा है कि अत्यन्त स्थिर होने पर भी यदा-कदा कुछ काल के लिए एक विषय पर एकाग्र होना ही विक्षिप्तावस्था कहलाती है। विज्ञानभिक्षु भी मानते हैं कि यह सत्त्वगुण के आधिक्य के कारण स्थिर हो जाने पर भी रजोगुण के कारण बीच-बीच में अस्थैर्य को प्राप्त हो जाती है। निष्काम कर्म करने तथा राग-द्वेष, काम, क्रोध तथा मोह आदि को छोड़ने से विक्षिप्त अवस्था उत्पन्न होती है। ऐसी अवस्था में मनुष्य की प्रवृत्ति एवं धर्म ज्ञान, वैराग्य तथा ऐश्वर्य में होती है। जबकि रजोगुण चित्त को विक्षिप्त करता रहता है। अतएव सत्त्वगुण की अधिकता के कारण एकाग्र हुआ चित्त रजोगुण मात्रा से बीच-बीच में विषयान्तर वृत्ति वाला हो जाता है। चित्त की यह अवस्था देवताओं, ब्रह्म-जिज्ञासुओं एवं विवेकी पुरुषों की कही जाती है।

4. एकाग्र : एकाग्र भूमि चित्त की सत्त्वगुण प्रमानावस्था है। इस अवस्था में रजस एवम् तमोगुण उस काल में अभिभूत रहते हैं तथा चित्त किसी एक विषय पर केन्द्रित हो जाता है, इसको विज्ञानभिक्षु एवं रामानन्दयति दोनों टीकाकारों ने स्पष्ट किया है। मौजवृत्ति में भी कहा गया है कि एकाग्रावस्था में चित्त की बाह्यवृत्तियों का निरोध हो जाता है। सूत्रकार ने चित्त को अग्र अथवा अवलम्बन के एक होने से उसे 'एकाग्रचित्त' कहा है। एकाग्रचित्त में सत्त्वगुण की प्रधानता होती है। रजस् तथा तमस् न्यून मात्रा में रहते हैं चित्त समस्या विषयों से स्वयं को हटाकर केवल ध्यान का रहता है। इसी की अन्तिम स्थिति ख्याति है। एकाग्रता को सम्प्रज्ञात समाधि भी कहते हैं।

5. निरुद्ध : निरुद्ध भूमि चित्त की अन्य अवस्थाओं से पूर्णरूपेण भिन्न है। यह चित्त की सर्वोत्कृष्ट अवस्था ही निरुद्ध अवस्था

कही गयी है। अन्य चार अवस्थाओं में किसी न किसी प्रकार की वृत्तियों अवश्य रहती हैं, जबकि निरुद्ध अवस्था में समस्त वृत्तियाँ का निरुद्ध हो जाता है और संस्कारमात्रा ही अवशिष्ट रह जाता है—ऐसा वाचस्पति मिश्र एवं विज्ञानभिक्षादि टीकाकारों ने माना है। निरुद्ध अवस्था में किसी प्रकार की वृत्ति रहने के कारण कोई पदार्थ भी जाना नहीं जाता तथा अविधदि कर्माशय रूप जन्मादिकों के बीज नहीं बचते, इसीलिए इसकी असम्प्रज्ञात या निर्बीज समाधि कहते हैं। योग-दर्शन में एक सूत्र है निर्विचारवैशारद्ये अमयात्मप्रसादः।



जब व्यक्ति निर्विचार की स्थिति में पहुँचता है, तभी वह सम्पूर्ण सत्य का साक्षात्कार करने की क्षमता रखता है। उसी समय उसकी ऋतभंरा प्रजा का उदय होता है। हमारे वैज्ञानिकों की बुद्धि निर्विचार स्थिति को न पा सकी, इसलिए वे पूर्ण सत्य के दर्शन से वंचित रहे। उनमें सत्य के साथ जो शिव और सुन्दर है, वह समन्वित नहीं हो पाया। गीता में सम्पूर्ण सत्य का केन्द्रबिन्दु हृदयद्वेश बताया है।

शान्ति का मार्ग शाश्वत सत्य का मार्ग है। प्रेम भाव के द्वारा, आनन्द और रस के अनुभव द्वारा वह मार्ग प्राप्त होता है विद्वेष और संघर्ष के द्वारा वह शान्ति प्राप्त नहीं होती, उसके लिए विकास चाहिए। इस

दृष्टि से भारतीय दर्शनों में योगदर्शन ही दर्शन को सही रूप में अन्वर्थ करता है 'दृश्यतेप्नेन इति' व्युत्पत्ति से प्रमाणशास्त्र है और 'दृश्यते यः' इस व्युत्पत्ति से यह प्रमेयशास्त्र है ज्ञातज्ञान और ज्ञेय, यह त्रिविध समूह दर्शन शब्द से अभिहित किया गया है। योगदर्शन में हृदयद्वेश का अनुसंधान है। इसके साधन—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, धरणा, ध्यान, प्रत्याहार और समाधि ये सभी हमारे जीवन की तात्कालिक समस्याओं का समाधान करने में समर्थ है। जैसे यम-नियम के अभ्यास से व्यक्ति का सामाजिक जीवन मधुर और संघर्षरहित बनता है। आसन, प्राणायाम आदि से मन एकाग्र होकर सत्त्वप्रधान होती है जिससे

बुद्धि एकाग्र होकर सत्त्वप्रधान बनती है तथा समग्र सत्य को देखने की सामर्थ्य आती है और प्राणायाम का परिणाम होता है 'ततः क्षीयते प्रकाशावरणम्' अर्थात् वस्तुत्व का यथार्थ प्रकाश प्राणायाम द्वारा होता है। इससे योगी अतीत, अनगत तत्त्वों का ज्ञानकर, हानोपाय जानकर ठीक-ठीक कर्म में प्रवृत्ति हो सकता है और अपने कर्मबंधन को शिथिल कर देता है। उसकी बुद्धि सात्विक बनती है जिससे वह समता में स्थित होकर पक्षपात रहित आचरण कर सकता है। विश्व के विनाश से अपने को बचाकर धर्ममेघ समाधि की स्थिति में पहुंचकर विश्व का कल्याण करने का निरन्तर उपाय करने लगता है। तभी जब उसकी प्रज्ञा समाधि स्थित होती है उसके अन्दर बुद्धि का ऐसा धर्म उदित होता है जहां यह सात्विक बुद्धिसमाधि युक्त हुए बिना प्राप्त नहीं हो सकती। समाधि से योगनिद्रा प्राप्त होती है तथा कर्मज व्याधियों का अन्त होता है, पूर्ण शान्ति का अनुभव होता है, इसिलिए गीता में संकेत किया है कि जब तक समाधिस्थ प्रज्ञा की उपलब्धि नहीं होती तब तक तर्क और विचार से वर्तमान जीवन की विसंगतियों की निवृत्ति नहीं हो सकती। क्या करणीय है, क्या अकरणीय है, यह विवेक ही बतलायेगा और विवेक को उपलब्ध करने के लिए वैराग्य जगाना पड़ेगा। तभी वस्तुवादी दृष्टि जो कि भोगपरायण होने से दुःख की जननी है, दूर होकर आत्मवादी सर्वांगीण सत्य की दृष्टि होगी, उस दृष्टि से जो सिद्धांत उद्धृत होंगे, वे त्रैकालिक सत्य होंगे और निर्दोष होंगे। भारत के ऋषियों ने इसीलिए इस 'मेध' की प्रार्थना की

जब तक समाधि प्रज्ञा की उपलब्धि नहीं होती तब तक कोरे ज्ञान से न तो कर्माशय संस्कार निःशेष होता है और न संस्कार निःशेष हुए बिना मोक्ष और स्वरूप प्रतिष्ठा की कल्पना की जा सकती है। फिर त्रिविधः खात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः इस सांख्य सूत्र में त्रिविध दुःखों की निवृत्ति को ही परम पुरुषार्थ कहा है, इसकी उपलब्धि तब होती है जबकि 'पुरुषार्थशून्यानां गुणानां प्रतिप्रसवः कैवल्यं स्वरूपप्रतिष्ठा चित्तिशक्तिरिति इस प्रकार यह फलितार्थ हुआ कि योग-समाधि में आरुढ़ हुए बिना न मनुष्य सुखी बनता है न विश्व। जीवन-मृत्यु का रहस्य योगी ही जान पाता है, वही इस संसार में मरकर जीवित रहने की कला जानता है और जीवित रहकर मरता है।

योग-समाधि से ही अखण्डाकार वृत्ति में स्थित होकर योगी हृद्देश में स्थित ईश्वर के साथ तदाकार होता है तथा सम्पूर्ण सत्य का साक्षात्कार कर लेता है और जड़-चेतन की ग्रन्थि को

खोलकर कृतार्थ होता है। इसी से विश्व और व्यक्ति का संबंध समरस होता है। जैसा कि उपनिषद् उद्घोषित करता है

मिद्यते हृदयग्रन्थिश्चिपधन्ते सर्वसंशयाः।

क्षौयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे।।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि आज विश्व-शांति आकाशकुसुम की भांति असम्भव होती जा रही है। इस समय विश्व के आधे से अधिक देश आतंकवाद से पीड़ित हैं वहाँ से समय-समय पर जो तस्वीरें आ रही हैं वह स्तब्ध करने वाली हैं। उत्तर कोरिया, ईरान और अमेरिका हमेशा युद्ध के लिए तैयार हैं। राष्ट्र और राज्यों के बीच, व्यक्ति, व्यक्ति के बीच शोषण, तनाव और भय का वातावरण व्याप्त हो रहा है और मनुष्य को भूखा रखकर बड़े-बड़े राष्ट्र-राष्ट्रीय आय का अधिकांश भाग परमाणु हथियारों के आविष्कार और परीक्षण पर खर्च करने में लगे हैं। इससे सम्पूर्ण विश्व में मुद्रास्फीति और महंगाई व्याप्त है। इन परमाणु हथियारों के कारण पर्यावरण प्रदूषण और वातारण में अनेक जीव-जन्तुओं का सफाया हो गया है। रासायनिक हथियारों से लड़ाई के साथ-साथ जीवाणु युद्ध, कीटाणु युद्ध के लिए भी तैयारी हो रही है। अमेरिका सहित कई समृद्ध देशों में ऐसे-ऐसे संवमक बीमारियों के लिए कीटाणु तैयार कर चुके हैं जिससे पूरा का पूरा देश सफाया हो सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि मूल्यविहीन जीवन-दर्शन के कारण यह सब हो रहा है। व्यक्ति, पर्यावरण आतंकवाद और जीवन-मूल्यों का अध्ययन समग्रता में होना आज के समय की सबसे बड़ी जरूरत है। आज मानवता नाना प्रकार के आध्यात्मिक, अतिभौतिक और अधिदैविक दुःख से त्रस्त है। एकांगी विकास से प्रेम और आनन्द का अभाव होता जा रहा है। विज्ञान के खोजों ने जीवन को और एकांगी बना दिया है।

भौतिकतावादी जीवन दर्शन हमारे जीवन की समस्याओं को सुलझाती नहीं बल्कि उलझाती ही है, इसिलिए योग को आत्मसात् करने पर हमें न केवल आत्मिक शांति मिलेगी बल्कि स्वस्थ और सुंदर जीवन व्यतित करने में भी सहायता मिलेगी।

प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2019-20 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	‘क’ क्षेत्र	‘ख’ क्षेत्र	‘ग’ क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र को 100% के राज्य/संघ क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र को 90% के राज्य/संघ क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र को 55% के राज्य/संघ क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ सुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात हिंदी ई-पुस्तक सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रानिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद।	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%
13.	(I) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे/सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(II) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें			
	(क) हिंदी सलाहकार समिति		वर्ष में 2 बैठकें	
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)	
	(ख) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद		100%	



संजीव श्रीवास्तव

कितना सुन्दर देश हमारा
हरियाली को लिये यहाँ पर,
नाच रही तरु शिखा मनोहर
पक्षी करते रहते कलरव,
नीर नदी का बहता अविरल
राम, कृष्ण का मर्म यहाँ पर,
वेद ज्ञान, विज्ञान यहाँ पर
गौतम बुद्ध का समभाव निरन्तर,
गुरुओं का त्याग यहाँ पर
आओ इनसे प्रेरित होकर,
चलें परस्पर प्रगति पथ पर,
विश्व में फिर प्रेम बढ़ाकर,
वसुधैव कुटुम्बकम् का भाव बढ़ाकर
भारतवर्ष को करें चरम पर ।

उप महाप्रबंधक, योजना विकास विभाग



अनबूझ पहेली

राजीव राय

क्या अजब-गजब है, यह दुनिया,
जहाँ पत्थरों में, फूल खिल जाते हैं,
कुछ अजनबी भी अपने बन जाते हैं।
अपने कुछ अजीज, जानी दुश्मन बन जाते हैं।

यह सब संगत का असर है,
या फिर विलुप्त होते संस्कारों का,
इस माया-मोह की दुनिया में,
रिश्ते तार-तार हो जाते हैं।

इस कलियुगी दुनिया में,
मुर्दों को कफन भी नसीब नहीं होता।
और कुछ हसीनाओं की कब्रों पर,
यादगार में ताजमहल भी बनाए जाते हैं।

कल तक तो तुम इंसान थे,
आज इंसानियत कहाँ गई,
अपने पर बीती तो,
तो हैवानियत कहाँ गई।

दूसरों के आसुओं का,
तुमने बहुत मजाक उड़ाया,
अपने पर आई जब मुसीबत,
क्यों जीवन को नरक बताया।

क्यों इंसान नहीं सोचता,
कल उसके अपने भी हिंसा के शिकार होंगे,
खून-खराबे की इस दुनिया में,
इंसानियत फिर तार-तार होगी।

प्र. का. राजभाषा विभाग



वैभव कुमार मिश्र

माँ है तो कोई खयाल रखाता है,
जिन्दगी के सफर का हाल रखाता है ।

मैंने माँ से कहा, बड़ा बेचैन रहता हूँ,
सुनकर ये मुझसे ज्यादा वो बेचैन रहती है ।

माँ कहती है, पहले तू खाना तो खा ले,
फिर तेरी परेशानी का हाल, हम मिल के निकालें ।

जा रहा हूँ मैं, माँ आशीर्वाद तो दे मुझे,
हल्दी-चूने का टीका लगाकर कहती है,
जा बेटे यह आशीर्वाद है मेरा तुझे ।

निकला जब घर से, तो उसकी आंखों रो रही थीं,
पलट कर देखा, तो वो खुशी से आँसू छिपा रही थी ।

मैंने कहा माँ तू क्यों छिपाती है आँसू,
तू उधर छिपाती है, तो मेरे आंखों में भर आते हैं आँसू ।

जा बेटा तुझ पर, जीवन के दुखों का साया न पड़े,
तू जीवन की हर मुश्किलों को बड़े साहस से लड़े ।
आ गई कदमों में स्फूर्ति, माँ का आशीर्वाद पाकर,
अब चाहे जीवन की कोई समस्या हो, मैं मानूँगा उसे हराकर ।

माँ पूँछती है हाल, जब परदेश में होता हूँ,
क्या बताऊँ उसे कि मैं उसकी याद में रोता हूँ ।

हँसा देती है वो मुझे, मेरे बचपन के किस्से सुनाकर,
मैं भी हँस देता उन पर सारे गमों को भुलाकर ।

सोते हुए सर्दियों की रात में, यूँ दे कर मुझको ठिठुरते,
महसूस किया मैंने किसी को, मेरे तन पर कंबल लपेटते ।

मेरे किस्से, मेरी कहानी, उससे ज्यादा कोई न जाने,
मिलता है पल दो पल, पूँछ लेता हूँ जाने अनजाने ।

आंचलिक कार्यालय, बरेली



वी. एस. मिश्रा

इंतज़ाबी मौसम, खासी है शोरगुल ।

गीधों ने साज छेड़ी मौसीकी बुलबुल ॥

गाड़ी के काफिले, शोरों शराबा आँधी ।
नुककड़ के मजलिसों में, कातिल बने हैं गाँधी ॥

मुकम्मल हुए न वादे, कैसा फितूर है ।

वादों का नया पिटारा हाजिर हुजूर है ॥

जलवा जनाबेआली का, कुछ यूँ हुआ नुमाया ।
पैदल ही चल रहे हैं कदमबोशी कराने वाले ॥

तर्ज जम्हूरियत की, कैसी है बानगी ।
अमीरो के चौंचले हैं गरीबों से दिल्लगी ॥

आंचलिक कार्यालय, भोपाल

विरासत

“जिस प्रकार खेतों में खरपतवार के नष्ट होने से फसल लहलहा उठती है ठीक उसी तरह बुराइयों के विध्वंस से अच्छाइयों के बीज स्वपोषित होने लगते हैं।” इसी प्रेरक विवेचना के साथ वर्गावसान हो गया और प्राध्यापक स्टाफ रूम की ओर चल पड़े। “नमस्कार राधेश्याम जी” कक्षा से निकलते ही समाजशास्त्र की प्राध्यापिका ने कहा। ऊँचा कद, पुष्ट शरीर और सिर पर सफेद बाल, मानो प्रकृति ने व्यक्तित्व के अनुसार ही उनकी छवि निर्मित की हो। महाविद्यालय का ऐसा कोई भी प्राध्यापक नहीं था जो उनसे प्रभावित न हो और उनका सम्मान न करता हो। डॉ. राधेश्याम प्रदेश के बेजोड़ प्राध्यापकों में से एक थे। अध्यापन कला, वक्तृता और विद्वता का ऐसा संगम जिसमें अवगाहन करने वाला छात्र शैक्षणिक ऊंचाइयों को स्वतः ही स्पर्श कर लेता। उनके पढ़ाए न जाने कितने ही छात्र देश एवं विदेश में उच्चाधिकारी थे और उनके मार्गदर्शन में शोध करने वाले छात्रों ने विभिन्न विश्वविद्यालयों में ख्याति प्राप्त की थी।

डॉ. राधेश्याम की प्रबल इच्छा थी कि उनकी इस शैक्षणिक विरासत को उनका पुत्र कदम आगे बढ़ाए परंतु उनके पुत्र ने पढ़ाई-लिखाई में कभी मन ही नहीं लगाया। पिता के विराट व्यक्तित्व के समक्ष उनकी कोई भी शैक्षणिक योग्यता लघु ही साबित होती और इस कुण्ठा में ज्यों-त्यों उन्होंने स्नातक की परीक्षा तो उत्तीर्ण की लेकिन उनका प्राप्तांक औसत ही रहा। पिता के सम्मान में उसने स्नातकोत्तर की पढ़ाई जारी रखी पर आधे मन से। डॉ. राधेश्याम प्रयास भी करते तो पुत्र के नए-नए बहाने। कुल मिलाकर यही वह मोर्चा था जहाँ वह अपने आप को विवश पाते। नित्य भोजन के समय पिता-पुत्र में मौन संग्राम छिड़ा रहता था।

राधेश्याम जी आज देर से घर पहुंचे। पिता-पुत्र में मतभेद अवश्य था किंतु कदम अब भी पिताजी का खाने पर इंतजार कर रहा था। ठण्ड के मौसम में गर्मागर्म कढ़ी पिता-पुत्र दोनों की पसन्द थी। कदम की माता जी ने दोनों के लिए एक साथ खाना परोसा। “एम.ए. के अंतिम वर्ष में जैसी तुम्हारी तैयारी चल रही है मुझे नहीं लगता कि इस बार का तुम्हारा परीक्षा परिणाम कुछ अलग होगा। ऐसे परीक्षाफल व ज्ञान से जीवन यापन भी निष्क्रिय ही होगा।” पिता जी ने पहला निवाला लेते ही कहा। परीक्षा के अच्छे परिणाम और डिग्री क्या कभी आदर्श जीवन स्तर के आंकलन का आधार हो सकते हैं। स्थानीय लोगों के लिए यह उनकी सोच बन गई है कि ज्ञान के बदले कर्म पर ध्यान केन्द्रीत किया जाए तो समाज का ज्यादा भला होता है क्योंकि ज्ञान बहुधा अकर्मण्यता के लिए आवरण के रूप में ही प्रयुक्त होता है। कदम ने विनम्रता से जवाब दिया। “लेकिन तुम्हारा जो हाल है उसमें

भी कौन सी विशेष बात है जो तुम्हारे उजले भविष्य की ओर इशारा करती है। दिनभर कॉलेज के कैटीन में बैठे हुए मिलते हो। दूसरे प्राध्यापक के पुत्र भी तो हमारे महाविद्यालय में पढ़ते हैं। क्या तुम्हें उनमें और स्वयं में कोई अंतर नजर नहीं आता। मेरी छत्र-छाया में अध्ययन करने के लिए छात्र तरसते हैं और तुम हो कि मुझे सीखाने चले। लगता है तुम्हें मेरे स्थान पर होना चाहिए और मुझे तुम्हारे स्थान पर।” तुनकते हुए डॉ. राधेश्याम ने कहा। पुत्र को बात अच्छी नहीं लगी लेकिन उसे पता था कि उसकी घर में स्थिति क्या है। कुछ दिन पहले ही पास में झुगियों के बीच स्थित पुस्तकालय में पुस्तकालयाध्यक्ष पद के लिए इशतहार आया था। रात भर की व्याकुलता के बाद कदम ने निर्णय लिया कि इस पद के लिए वह आवेदन करेगा। उसने स्थानीय पुस्तकालय में पुस्तकालयाध्यक्ष की नौकरी प्रारम्भ कर दी। पिता बहुत बिगड़े परंतु कदम अपेक्षाकृत भले ही कम शिक्षित हो मन के मालिक थे।



देवेन्द्र कुमार

पुस्तकालय में कदम का मन लग गया था। कई दाढ़ी वाले झोलाछाप नेतानुमा लोग वाचनालय में आते और विभिन्न विषयों पर बातें करते जिनमें सामाजिक भेदभाव, अर्थहीन जनतंत्र, शोषण, गरीबी, सरकार की संवेदनशीलता जैसे कई विषय होते थे। कदम भी इन चर्चाओं में भाग लेता। आज आया हुआ व्यक्ति कुर्ते पर कलम खोंचे हुए, मोटे फ्रेम का चश्मा और बगल में कपड़े का झोला लटकाया हुआ। “क्या आप किसी अखबार के संपादक हैं?” कदम ने जिज्ञासावश पूछा। “जी हाँ दैनिक-अग्निबाण। यही कोई लगभग 10,000/- प्रतिर्याँ जिले में निकलती हैं। क्या आप अखबार नहीं पढ़ते?” संपादक महोदय ने कदम के बातों का जबाब देते हुए कहा। मैं अखबार पढ़ता हूँ लेकिन जिसके संपादक आप हैं शायद वो नहीं। अखबार के पृष्ठ, अतिरिक्तांक, विज्ञापन से कमाई और अनेक विषयों के बारे में चर्चा शुरू हो गई थी। कदम ने पूछा कि अभी कौन सा ज्वलंत विषय आपके संपादकीय पृष्ठ पर जड़ किए हुए है। “भला किसी विकल्प के वर्तमान संसाधन को नष्ट करना कहाँ की समझदारी है? ये तो वही बात हुई कि गाँवों में बिजली के खंभे ही नहीं लगे हैं और वहाँ दीपक जलाने के लिए कैरोसिन की आपूर्ति पर रोक लगा दी गई हो।” बात मेरे समझ से परे है जरा स्पष्ट बताइए। आँखों की हया बता रही थी कि कदम इस मुद्दे से अंजान है। “अरे यही कि जिस झुग्गी में आपका पुस्तकालय है उस बस्ती को उजाड़कर शहरी विकास मंत्री उसके स्थान पर नए पक्के मकान बनवाना चाहते हैं। हाल ही में सरकारी

घोषणा हुई है कि शहर के सौन्दर्य वर्धन के लिए झुग्गी झोपड़ी उजाड़ी जाएगी। इसी विषय में स्थानीय लोगों की राय जानने आया था जिसे अखबार में छाप सकूँ। भला स्थानीय लोगों की राय को भी अखबार में स्थान मिलना चाहिए कि नहीं? कब तक विशेष वर्ग के खास लोग अखबार को जकड़े रहेंगे। आपका पुस्तकालय देखा सो यहाँ चला आया, थकान भी लगी थी और यह विचार भी था किसी सज्जन से मुलाकात हो गई तो उनका विचार और मिल जाएगा। देखिए मेरा अंदाज सही निकला और आप मिल गए।” दोनों हँस पड़े। शहर का सौन्दर्य वर्धन अच्छी बात है किंतु बिना किसी वैकल्पिक व्यवस्था के लोगों को उजाड़ना किसी जनतंत्र में औचित्यपूर्ण हो सकता है? कदम को यह बात बिल्कुल अच्छी नहीं लगी। संपादक महोदय की थकान दूर हो गई और वे आम लोगों के विचार को अखबार में जगह देने के प्रयोजन को मूर्त रूप देने के लिए जा चुके थे। कदम की बस्ती में पकड़ कुछ अधिक ही थी। लोगों को समझाना उसे अच्छी तरह आता था। वकृत्व व संप्रेषण कला पिता के समान तो नहीं लेकिन लोगों को प्रभावित तो कर ही सकती थी। महाविद्यालय के कैटिन में बैठकर समाजिक सरोकार पर ही तो विचार-विमर्श होता रहता था। बस्ती के लोगों के साथ-साथ कुछ स्थानीय जनप्रतिनिधि भी उसके पक्ष में थे। फैसला हुआ कि मंत्री के विरूद्ध घेराव का आयोजन कर दबाव बनाया जाए कि घोषणा किसी तरह वापस लिया जाए। पहले उजड़ने वाले लोगों के वैकल्पिक आवास की व्यवस्था करने के पश्चात ही कार्य प्रारम्भ हो।

आज वही दिन था। डॉ. राधेश्याम प्रातःकाल से अनमने थे क्योंकि महाविद्यालय से ठीक पाँच किमी की दूरी पर शहरी विकास मंत्री ठाकुर रघुवीर सिंह के घर पर उनके पुत्र कदम के नेतृत्व में झुग्गी झोपड़ी वासियों के एक लम्बे जुलूस ने मंत्री महोदय के घर का घेराव किया था। अभी तक समाचार यह था कि मंत्री जी पुलिस व अपने गुर्गों की मदद से इस जुलूस का दमन करने के लिए तैयार बैठे थे। डॉ. राधेश्याम इसी कारणवश उद्धिग्न थे क्योंकि इस तरह के घटनाक्रमों का परिणाम उनसे छिपा न था। हुआ वही जिसकी संभावना होते हुए भी उनका मन उसे मानने के लिए तैयार न था। जुलूस में पुलिस बल के जवाबी कार्रवाईयों के फलस्वरूप अफरा-तफरी मच गई। न जुलूस काबू में आता था और न ही दमन रुकता था। इसी क्रम में कदम को गंभीर चोटें आई और उन्हें अचेत अवस्था में अस्पताल पहुँचा दिया गया।

डॉ. राधेश्याम की प्रबल इच्छा हो रही थी कि दौड़कर पुत्र का कुशलक्षेम पूछे परंतु मुख्यमंत्री आवास से भी तुरंत मिलने का न्यौता पाकर असमंजस में थे जहाँ से उनकी पूछ-परख पहले कभी नहीं हुई थी, यूँ तो शहर में सभी प्रतिष्ठित व्यक्तियों से उनका सरोकार था। पुत्र मोह ने विजय पाई और डॉ. साहब खून से लथपथ कदम के सिराहने

बैठकर उसका मस्तक सहला रहे थे। कदम क्षण भर के लिए होश में आया और पिताजी को बैठा देखकर हाथ पकड़कर बोला पिताजी मैंने आपसे सीखा है कि बुराई के विध्वंस से अच्छाई का जन्म होता है। मैंने आपसे विषयज्ञान तो प्राप्त नहीं किया पर इस एक पंक्ति की दीक्षा जरूर प्राप्त की, जिसने मुझमें साहस पैदा किया कि मैं सामाजिक संघर्ष में हँसते-हँसते प्राणोत्सर्ग के लिए तैयार हो गया। सच अगर आपसे आपके ज्ञान का थोड़ा सा अंश और मिल जाता तो शायद उसके आधार पर मैं दुनिया बदलने के लिए सचेष्ट हो जाता। मैंने आपकी दीक्षा का आदर किया है, पर आपसे एक संकल्प मांगता हूँ कि इस संघर्ष में यदि मैं वीरगति को प्राप्त करता हूँ तो मेरे संकल्प को आप पूरा करेंगे। वैसे तो पिता की विरासत पुत्र को संभालनी चाहिए। मैंने आपकी दीक्षा की विरासत संभाली और सतकर्म की ओर अग्रसर हुआ। अब आप मेरे संकल्प की विरासत संभालिए। इतना कहते-कहते कदम फिर अचेत हो गया।

डॉ. राधेश्याम के चेहरे से ओज बरस रहा था, जिस पुत्र को नाकारा समझकर उन्होंने उपेक्षित किया था वह अब उनके उन शिष्यों से बहुत अच्छा था जिन्होंने उनके द्वारा दिए गए ज्ञान को रोजी-रोटी तक ही सीमित रखा। आज कदम उन्हें राजा जनक जैसे प्रतीत हो रहे थे जो उनके जैसा अष्टावक्र के ज्ञान के निचोड़ को अपने व्यक्तित्व में समाहित कर चुका था। चिकित्सकों का जत्था बेहोश कदम को गहन जांच के लिए ले गया। डॉ. राधेश्याम बोझिल मन से मुख्यमंत्री आवास की ओर चल पड़े। यथोचित अभिवादन के पश्चात मुख्यमंत्री ने आग्रह किया श्रीमान आपके सरीखा विद्वान प्रदेश में अन्य नहीं है। आपकी इच्छा हो तो हमारी पार्टी आपको उच्च शिक्षा विभाग के किसी प्रतिष्ठित पद पर आसीन करना चाहती है। कृपया अनुग्रह स्वीकार करें और अपने पुत्र के साथ इस नवजीवन में प्रवेश के लिए तत्पर हो। बिना वैचारिक चिंतन के डॉ. राधेश्याम को उत्तर देने की आदत न थी। “अगर मुझे या मेरे पुत्र को कर्तव्य विमुख करने के लिए यह प्रस्ताव है तो सविनय निवेदन करता हूँ कि मैं इस पद के योग्य नहीं हूँ। आज ही मेरे पुत्र ने मेरी दीक्षा को क्रियान्वित किया है और प्रत्युत्तर में अपने संकल्प की विरासत मुझे सौंपी है। पुत्र, पिता की विरासत संभाले यह तो जग प्रत्यक्ष है। आज इस पिता को अपने पुत्र की विरासत संभालना है।”

अगली सुबह ‘दैनिक-अग्निबाण’ के संपादकीय पृष्ठ पर पहली बार झुग्गी बस्ती के सामान्य लोगों के विचारों और उनके जुलूस का प्रशासन द्वारा किए गए बर्बरतापूर्वक दमन का संपादक महोदय ने बड़ी बारिकी से विश्लेषण किया था।

प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग

उत्तराखंड राजनैतिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक परिवेश

उत्तराखंड राज्य भारत में देवभूमि के नाम से जाना जाता है। यहाँ बद्दीनाथ धाम, केदारनाथ धाम, गंगोत्री और यमुनोत्री धाम बसे हैं। यहाँ पाँच प्रयाग हैं जिन्हें पवित्र नदियों का संगम माना जाता है। ये हैं देवप्रयाग जहाँ अलकनंदा और भागीरथी मिलती हैं, रुद्रप्रयाग जहाँ अलकनंदा और मंदाकिनी नदी मिलती हैं, कर्ण प्रयाग जहाँ अलकनंदा और पिंडर नदी मिलती हैं, नन्द प्रयाग जहाँ मंदाकिनी और अलकनंदा मिलती हैं और विष्णु प्रयाग जहाँ यहाँ अलकनंदा और विष्णु गंगा मिलती है। इसकी सीमाएं तिब्बत, चीन, नेपाल तथा उत्तरप्रदेश से लगी हुई हैं। राज्य की अंतरिम राजधानी देहरादून है जो की राज्य को सम्पूर्ण भारत के रेल तंत्र से जोड़े हुए है। देहरादून से लगभग 35 किलोमीटर पर राज्य का हवाई अड्डा है जो की जॉली ग्रांट के नाम से जाना जाता है। जॉली ग्रांट हवाई अड्डा राज्य को सम्पूर्ण भारत के हवाई मार्ग से जोड़ने का काम करता है।

पुरातत्व विश्लेषक इस राज्य में पुरातन से इंसान की मौजूदगी का इशारा करते हैं। कहा जाता है कि वैदिक काल में यह राज्य उत्तर कुरु नाम से जाना जाता था। कुमाऊँ इलाके में दूसरी सदी में कुनिनदास लोग थे जो शिव भक्त थे। कलसी में पाये गए अशोक स्तंभों से प्रतीत होता है कि राज्य में कभी बौद्ध धर्म भी मौजूद था। मध्यकालीन भारत में यहाँ गढ़वाल तथा कुमाऊँ राज्य स्थापित हो चुके थे। आज राज्य के लोगों को या तो उत्तराखंडी कहा जाता है या गढ़वाली तथा कुमाऊनी कहा जाता है।

स्वतंत्र भारत में लम्बे समय तक यह राज्य उत्तर प्रदेश का भाग रहा। उत्तरप्रदेश की भौगोलिक स्थिति तथा सरंचना में यह एक पहाड़ी हिस्सा बन कर रह गया तथा विकास की किरण

स्वतन्त्रता के बाद इस पहाड़ी क्षेत्र को नहीं छू पायी। राज्य को मिलने वाली वित्तीय सहायता यहाँ तक कभी पहुँच नहीं पाई तथा पूर्ण राज्य बनने तक यह एक पिछड़ा इलाका ही रह गया।



राजनैतिक दृष्टि से यह इलाका स्वतन्त्रता के बाद अलग थलग ही रहा। इस इलाके में जो एक क्षेत्र मजबूत रहा वह था यहाँ की शिक्षा व्यवस्था। यहाँ का आम नागरिक कम से कम इंटरमीडियट तथा स्नातक स्तर तक पढ़ा मिलेगा। पाश्चात्य जगत की संस्कृति इस इलाके में अपनी जगह नहीं बना पाई और राज्य अभी तक अपने शिक्षा, संस्कारों, तथा परंपरा से जुड़ा हुआ है।



प्रदेश की भौगोलिक स्थिति तथा राजनैतिक दृष्टि से अनदेखी की वजह से राज्य पिछड़ा रह गया। जनमानस में चेतना जगाने के लिए एक आंदोलन शुरू हुआ और देखते ही देखते आंदोलन ने राजनैतिक रूप ले लिया। 90 के दशक में उठा आंदोलन व्यापक रूप से फैल गया। केन्द्रीय सरकार ने

राज्य सरकार को अलग राज्य की उठती हुई मांग को सख्ती से दबाने के आदेश दे दिये। सरकार और राज्य सरकार के इस निर्देश के बाद आम नागरिकों और प्रशासन के बीच उठे मतभेद ने उग्र रूप ले लिया। छोटी छोटी झड़पे उग्र रूप लेने लगी। प्रशासन की तरफ से पहले लाठी चली और फिर गोलियाँ। व्यापक हिंसा तथा जन जन के आंदोलन बन जाने के बाद राज्य सरकार ने केंद्र सरकार को उत्तराखंड को अलग राज्य के रूप में स्थापित करने का प्रस्ताव भेजा और दिनांक 09 नवम्बर सन् 2000 में केंद्र सरकार ने उत्तराखंड को पूर्ण राज्य

का दर्जा दे दिया।

उत्तराखंड में महिलाओं की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है। महिला राज्य की मुख्य इकाई हैं शुद्ध भाषा में कहा जाए तो महिलाएँ स्वयं पहाड़ का बोझ ढोती हैं। राज्य के पुरुष वर्ग काफी समय तक भारतीय सेना के प्रमुख अंग के रूप में माने जाते रहे हैं और गढ़वाल में लेन्सडाउन नामक स्थान में गढ़वाल राइफल का सेंटर है। गढ़वाल राइफल अंग्रेजों के जमाने से बनी हुई है। लेन्सडाउन में आज भी ब्रिटिश राज के सैन्य अधिकारियों की कब्रें मौजूद हैं। जिनका रख रखाव सेना द्वारा किया जाता है।

आज भी राज्य के पुरुष वर्ग की भारतीय सेना में काफी भागीदारी है। इस प्रकार पुरुष राज्य से बाहर नौकरी पर हैं तथा स्त्रियाँ घर के कार्य कलाप से जुड़ी रहती हैं क्योंकि इस पहाड़ी राज्य के अन्दर अभी तक राज्य सरकार स्तरीय रोजगार हैं या फिर स्वरोजगार हैं परंतु औद्योगीकरण अभी पूर्ण रूप से नहीं हो पाया है जिसकी वजह से पलायन की स्थिति बनी रहती है।

अलग राज्य का दर्जा मिलने के उपरांत राज्य के लोगों ने बहुत तरक्की की है कारणवश आज राज्य के लोग भारत सरकार के कई उच्च पदों पर विराजमान हैं।

जनरल विपिन रावत आज भारतीय सेना के प्रमुख हैं। अनिल धस्माना जी रीसर्च एण्ड एनालिसिस विंग के प्रमुख हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री अजित ढोभाल जी हैं। भारतीय तटरक्षक बल प्रमुख श्री राजेंद्र सिंह जी हैं तथा श्री अनिल भट्ट जी भारतीय सेना में डीजीएमओ रहें हैं।

राज्य के कई अंदरूनी क्षेत्रों में आज भी वर्ण व्यवस्था विद्यमान है और आज भी पैसों के जगह वस्तु विनिमय यानि वस्तु की

जगह वस्तु का लेन देन प्रचलित है। खेती पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण बहुत मुश्किल से हो पाती है। पहाड़ में सीढ़ीनुमा खेत होते हैं इसलिए जानवरों का उपयोग खेती में होता है। पारंपरिक रूप से बैलों के द्वारा हल चलाया जाता है तथा बुआई हाथों द्वारा की जाती है। पहाड़ी झरने खेती के लिए पारंपरिक रूप से पानी के स्रोत हैं। राज्य बनने के बाद गावों में बिजली की व्यवस्था हो गई है जिसका प्रयोजन टेलिविजन, रेडियो, वॉशिंग मशीन, या छोटे घरेलू उपकरणों तक सीमित है। संचार व्यवस्था विकसित हो रही है। सड़कों का विकास हो रहा है। गढ़वाल क्षेत्र में नदियों की अधिकता की वजह से कई जलविद्युत योजनाएं विकसित हो रही हैं। राज्य में टिहरी जल विद्युत परियोजना सबसे बड़ी

जलविद्युत परियोजना है जिसकी बदौलत आज राज्य सीमावर्ती राज्यों को बिजली बेच रहा है।



राज्य में चार धाम होने के कारण राज्य में धार्मिक यात्रियों की संख्या सालाना दो से तीन करोड़ हो गई है इसके साथ ही कई सुंदर पर्यटन शहर मसूरी, नैनीताल, चकराता, देहरादून एवं ओली (जोशीमठ) विकसित किए गए हैं जो कि राज्य में पर्यटन उद्योग के प्रमुख स्रोत हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के निर्देशानुसार चार धामों के लिए ऑल वेदर रोड प्रोजेक्ट आरम्भ किया गया है।

जब ये प्रोजेक्ट पूरा हो जाएगा तो पर्यटकों की संख्या में बहुत अधिकता आएगी और राज्य की

पर्यटन व्यवस्था और सुदृढ़ हो जाएगी। निश्चय ही पर्यटन उद्योग विकसित होने पर राज्य की अर्थव्यवस्था में अभूतपूर्व सुधार आएगा। भारतीय रेल अभी तक ऋषिकेश तक विकसित है रेलमार्ग को रुद्रप्रयाग तक ले जाने का कार्य भी शुरू किया गया है। उम्मीद है इन सभी विकासवर्धक कार्यों से आने वाले दिनों में उत्तराखंड राज्य का सर्वव्यापी विकास होगा तथा राज्य को नई दिशा मिलेगी।

प्रधान कार्यालय, जनसंपर्क विभाग

ग्राहक के मुख से.....

महोदय,

एक सामान्य नागरिक के लिए बैंक में खाता खुलवाना बहुत ही कठिन कार्य है किंतु पंजाब एण्ड सिंध बैंक ने इसे बहुत ही सरल कर दिया। बैंक की शाखा राजेन्द्र प्लेस में संपर्क करने पर मेरा खाता तुरंत ही खोल दिया गया और उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि सेवा ही जीवन ध्येय है। मैं शिल्पा टिकी झारखण्ड की रहने वाली हूँ। काम करने के लिए मैं दिल्ली शहर में आयी और एक जगह काम करने लगी। मेरे कार्यालय ने वेतन खाता खुलवाने का निर्देश दिया। वेतन बैंक खाते में ही जाना था। खाता न होने के कारण मेरा वेतन मुझे नहीं मिल पाएगा। यह सोच सोच कर मैं बहुत ही परेशान थी। मैंने कई बैंकों के चक्कर लगाए, लेकिन कहीं भी मेरा काम नहीं हुआ। फिर एक दिन मैंने शाखा राजेन्द्र प्लेस में कार्यरत सुनीता जी के संपर्क में आयी। उन्होंने मेरा खाता बिना किसी परेशानी के खोल दिया और बैंक के स्लोगन को सही साबित किया। मैं शाखा प्रबंधक अशोक कुमार जी का और सभी स्टाफ का दिल से शुक्रिया करती हूँ।



शिल्पा टिकी

बैंक द्वारा दी गई अन्य सुविधाओं जैसे एटीएम कार्ड, मोबाइल और नेट बैंकिंग ने मेरी राह आसान कर दी है। मैं घर बैठे ही बैंकिंग और अन्य कार्य ऑन-लाइन सेवाओं से कर सकती हूँ, यही नहीं बैंक ने मेरा पेंशन खाता भी खोल दिया है और मेरे भविष्य को भी संवार दिया है। खाता होने के कारण मेरे लिए पैसे जोड़ना भी सरल हो गया है। अतिरिक्त पैसों को मैं बैंक में जमा करा देती हूँ।

मेरे लिए सारे काम आसान हो गए हैं। बिजली बिल, पानी बिल, टेलिफोन बिल, सब घर बैठे ऑन-लाइन बैंकिंग से संभव है। ऐसे मेरा समय भी बच जाता है। लाइनों में नहीं खड़ा होना पड़ता। घर बैठे ही सब काम हो जाते हैं। मैं तो ऑन-लाइन शॉपिंग भी कर लेती हूँ। खाता होना बहुत ही अनिवार्य है। बिना बैंक खाते के व्यक्ति जैसे अपंग है। मैं पंजाब एण्ड सिंध बैंक की अत्यंत आभारी हूँ। मैं आगे भी केवल इसी बैंक से जुड़े रहना चाहूंगी।

शिल्पा टिकी



ਹਿੰਦੀ/ਪੰਜਾਬੀ ਕਾਰ्यशालਾ



ਆਂਚਲਿਕ ਕਾਰਯਾਲਯ, ਭੋਪਾਲ



ਆਂਚਲਿਕ ਕਾਰਯਾਲਯ, ਗੁੜਗਾਮ



ਆਂਚਲਿਕ ਕਾਰਯਾਲਯ, ਜਯਪੁਰ



ਆਂਚਲਿਕ ਕਾਰਯਾਲਯ, ਬਰੇਲੀ



ਸਹਭਾਗੀ



पर्यावरण बचाओ, जीवन बचाओ

कल की ही बात है, मैं ट्रेन में सफर कर रहा था तो एक स्टेशन पर मैंने सफर में पढ़ने के लिए एक पत्रिका खरीदी जिसमें बहुत से लेख मानव और पर्यावरण से संबंधित थे उन लेखों को पढ़कर मन बड़ा चिंतित हो उठा क्योंकि उन समस्त लेखों का यही निष्कर्ष था कि पर्यावरण और पृथ्वी के भावी जीवन को बड़ा खतरा है इसका मुख्य कारण वर्तमान विज्ञान, सामाजिक लापरवाही, मानव का पर्यावरण के प्रति असंयम व्यवहार और पर्यावरण के विषय को अनदेखा करना जैसे:- मेरे साथ सफर कर रहे एक यात्री ने वही पत्रिका मुझे पढ़ने के लिए मांगी। मैंने उसे वह पत्रिका दी किन्तु उस यात्री को पत्रिका को पढ़ने में कोई रुचि नहीं आई और मुझे वापस कर दी। मैं समझ गया था इसमें कोई भी विषय मनोरंजन से संबंधित नहीं था इसलिए वह पत्रिका उसके लिए बेकार थी। यही हमारा सबसे बड़ा दुर्भाग्य है हम पर्यावरण से संबंधित विषयों को जानना भी नहीं चाहते हैं।

देखिए न, हम अपने देश के ही लोगो को देखते हैं कि वर्षभर देशभर में मनाए जाने वाले त्यौहारों, खेलकूद, चुनावों और व्यक्तिगत मनोरंजन में ही जिए जा रहें हैं। मैं केवल देश के आम नागरिकों की बात नहीं कर रहा हूँ बल्कि देश का नेतृत्व करने वाले उन सभी राजनेताओं जो देश के नागरिकों की सुविधा के लिए कार्य तो किए जा रहे हैं किन्तु पर्यावरण की सुरक्षा संबंधी कोई भी ठोस कदम नहीं उठा रहे है जो कि जीवन के लिए सबसे महत्वपूर्ण है। सभी को पर्यावरण बस एक मात्र दिवस के दिन ही याद आता है वो है (05 जून विश्व पर्यावरण दिवस)। इस महत्वपूर्ण दिवस को भी मनाने का वर्तमान में अलग ही प्रचलन चला है। प्रत्येक वर्ष इस दिन

विश्व स्तर पर एक नया थीम बनाया जाता है जोकि एक थीम मात्र ही रहती है जैसे :- 'पर्यावरण बचाओ' अब मन में यह प्रश्न उठता है कि क्या इस थीम की अनुपालना हो रही है? किसी को न कुछ पता है



अशोक कुमार सिन्हा

और न ही कोई असर पड़ता है। मेरे अनुसार इस दिवस को मनाने का वर्तमान में अलग ही प्रचलन चला है वह इस प्रकार है; किसी भी पर्यावरण कार्यक्रम में वक्ताओं द्वारा पर्यावरण बचाओ संबंधी एक, दो नारे दे दिए जाते हैं और छोटा सा पौधा लगाकर फोटो खींचा जाता है। पौधों के साथ सेल्फी ली जाती है और उस सेल्फी को सोशल साइट पर अपलोड करके पर्यावरण दिवस मनाया जाता है।

कहा जाता है कि जिस शहर में जहां बड़ी-बड़ी इमारत, रेल सुविधा, हवाई यात्रा सुविधा, विज्ञान एवं तकनीकी सुविधा, मेट्रो रेल सुविधा, जगह जगह बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियाँ, बड़ी बड़ी सड़कों के पुल आदि होते हैं वह शहर विकसित कहा जाता है। मेरे अनुसार ऐसा शहर विनाश की ओर जा रहा है क्योंकि ऐसे शहर बहुत से हरे-भरे पेड़ों को काटकर बनाए गए हैं, उन शहरों की आबोहवा को दूषित किया गया है और कई छोटे-छोटे तालाब व नदियों को पाटकर बसाए गए हैं। ऐसे शहरों में बसने वाले लोगो को पेड़ों की छांव, स्वच्छ वायु, स्वच्छ जल, शुद्ध भोजन, यहाँ तक कि खुला आसमान भी नसीब नहीं हो रहा है। मेरे अनुसार अगर विकास इसे कहते हैं तो मुझे ऐसा विकास नहीं चाहिए क्योंकि इस विकास में पर्यावरण को बिल्कुल जगह नहीं दी जाती है जोकि हम सबका जीवन है।



प्रत्येक माता पिता अपने बच्चों को उनके सुखद जीवन के लिए क्या कुछ नहीं करते हैं। वे अपने बच्चों के भविष्य के लिए अधिक से अधिक आय संसाधन, प्रापर्टी जुटाते हैं ताकि उनके बच्चों को भविष्य में रोटी, कपड़ा, मकान के लिए कोई समस्या न हो, वे बहुत खुश और खुशहाल जीवन बिताएँ। माँ-बाप अपने बच्चों के लिए ऐसी ही मनोकामना करते हैं। सोचने वाली बात यह है कि क्या हम अपनी भावी पीढ़ी के लिए खुली हवा, स्वच्छ जल, शुद्ध भोजन आदि दे पाएंगे या नहीं? खुली हवा, स्वच्छ जल, शुद्ध भोजन यह तो आय संसाधन, प्रापर्टी और सांसारिक भौतिकता से ज्यादा महत्वपूर्ण हैं।

जरा सोचिए जब हमारा पर्यावरण ही नष्ट हो जाएगा तो हमारे लिए त्योंहार, खेलकूद, चुनाव और व्यक्तिगत मनोरंजन तो दूर की बात हम तो खुली हवा, पानी के लिए के लिए तरसते घूमेगें। यदि समय रहते हम पर्यावरण को बचा नहीं पाए तो वो दिन दूर नहीं जब हमें आक्सीजन साथ में लेकर घूमना पड़ेगा। इसलिए हमें पर्यावरण के प्रति जागरूक होना अतिअनिवार्य है क्योंकि यदि जीवन नहीं तो कुछ नहीं।

आइये हम एक आम नागरिक के रूप में पर्यावरण को सुरक्षित रखने में कैसे योगदान दे सकते हैं।

- इसके लिए हम अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखें।
- सड़क पर कूड़ा ना फेंके और न ही कूड़े में आग लगाएं।
- कूड़ा रिसाइकल के लिए भेजें।
- प्लास्टिक, पेपर, ई-कचरे के लिए बने अलग-अलग कूड़ेदान में कूड़ा डाले ताकि वह आसानी से रिसाइकल के लिए जा सके।
- वाहन चालक निजी वाहन की बजाय कार-पूलिंग, गाड़ियों, बस या ट्रेन का उपयोग करें।
- कम दूरी के लिए साइकिल चलाना पर्यावरण और सेहत के लिहाज से बेहतर है।



➤ पानी बचाने के लिए घर में लो-फ्लशिंग सिस्टम लगावाएं, जिससे शौचालय में पानी कम खर्च हो।

- शॉवर से नहाने की बजाय बाल्टी से नहाएं।
- ब्रश करते समय पानी का नल बंद रखो। हाथ धोने में भी पानी धीरे चलाएं।
- गमलों में लगे पौधों को बॉल्टी-मग से पानी दें।
- नल में कोई भी लीकेज हो तो उसे प्लंबर से तुरंत ठीक करवाएं ताकि पानी टपकने से बरबाद न हो।
- नदी, तालाब जैसे जल स्रोतों के पास कूड़ा ना डालें। यह कूड़ा नदी में जाकर पानी को गंदा करता है।

➤ घर की छत पर या बाहर आंगन में टब रखकर बारिश का पानी जमा करें, इसे फिल्टर करके फिर से इस्तेमाल कर सकते हैं।

➤ अपने घर में थोड़ी सी जगह एक पेड़ के लिए भी रख लें और उस पेड़ को अपने घर का सदस्य बनाएं।



“पक्षी पर्यावरण के संकेतक होते हैं। अगर वो परेशानी में हैं, तो हम जानते हैं कि हम लोग जल्दी ही परेशानी में होंगे ‘रोजर टोरी पीटर्सन’ द्वारा कहा गया कथन बिल्कुल सत्य है। जरा याद कीजिए आपने गौरैया कब देखी थी शायद बहुत दिनों पहले लेकिन अब वायु प्रदूषण के चलते कुछ पक्षी विलुप्त हो रहे हैं।

पर्यावरण को बचाने की मुहिम की शुरुआत हम और आपसे ही होगी इसके लिए कोई भगवान अवतरित नहीं होंगे। प्रत्येक देश की सरकार को इस विषय को अमल में लाना चाहिए, नहीं तो न रहेगी धरती और न ही बनेगी सरकारें और न ही बचेगा जीवन।

ऑचलिक कार्यालय, बरेली

आपकी कलम से

राजभाषा अंकुर का स्तर पहले से बेहतर लगा। सभी लेख प्रशंसनीय हैं। डॉ नीरू पाठक का लेख उगादि बहुत ही रोचक एवं ज्ञानवर्धक लगा। मैं श्री गोपाल कृष्ण जी के महिला सशक्तिकरण सामाजिक उत्थान लेख पर बधाई देता हूँ। पत्रिका के उत्कृष्ट प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को बधाई। आगामी अंकों के लिए शुभकामनाएं।

श्री पंकज द्विवेदी,
उप महाप्रबंधक (अग्रिम)

महोदय,

हमें आपके कार्यालय से तिमाही हिंदी पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' के जनवरी-मार्च, 2019 अंक की प्रतियाँ प्राप्त हुई हैं। हमें बहुत खुशी हुई है कि अंकुर पत्रिका में इस बार तेलुगु भाषा की रचना, उसके हिंदी प्रारूप सहित प्रकाशित की गई है, यह बहुत सराहनीय बात है। इसके लिए हमारे कार्यालय की ओर से इस अंक हेतु आपको बहुत-बहुत बधाई। इस अंक की साज-सज्जा एवं जगह-जगह से संगठित किए हुए फोटो भी अति सुंदर हैं, विशेष कर खेल दिवस की।

गोपाल कृष्ण
आंचलिक प्रबंधक, दिल्ली-11

आदरणीय महोदय,

आपके पत्रांक रा. अंकुर/2018-19/3480 दिनांकित 03 जून, 2019 के साथ राजभाषा अंकुर मिली। सबसे पहले आपको इस सारगर्भित अंक और बैंकिंग से संबंधित जानकारीप्रद उत्कृष्ट आलेखों के संकलन, संपादन और प्रकाशन के लिए बधाई। हर पृष्ठ पर भारत की सशक्त महिलाओं की जानकारी और उनके विचार बताते हैं कि पत्रिका को अंतराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में महिला सशक्तिकरण की थीम में बांधा गया है। ये वाक्यांश और तथ्य वस्तुतः अपने आप में एक पूरी दास्तान बयां करते हैं। इसके लिए अलग से कहीं कुछ कहने की आवश्यकता समाप्त हो जाती है।

भाषिक एकता की दृष्टि से तेलुगु भाषा का आलेख और उसका हिन्दी अनुवाद पत्रिका में शामिल करना राजभाषा अंकुर द्वारा की गई सराहनीय और अनुकरणीय पहल है।

पत्रिका में बैंकिंग और राजभाषा हिन्दी की विकास यात्रा संबंधी आलेख जहां ज्ञानवर्धक हैं, वहीं ऋतुराज के आगमन को पढ़कर तो जैसे मन में बसंत खिल उठता है। 'अकेली' शीर्षक कहानी वृद्धावस्था के अकेलेपन को उकेरती है और आंखें नम कर देती है। कुल मिलाकर अंक संग्रहणीय बन पड़ा है।

प्रियांशु तिवारी
मुख्य प्रबंधक, भारतीय निर्यात-आयात बैंक

राजभाषा अंकुर का मार्च-2018 का अंक मिला इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। वर्षों से पत्रिका का नियमित पाठक होने के कारण मैं इसके प्रति अंक परिष्कृत होते स्वरूप से भलीभाँति परिचित हूँ। साहित्य, संस्कृति, स्वास्थ्य, बैंकिंग एवं बैंक के विभिन्न क्रियाकलापों की सूचना जैसे विषयों से सजी पत्रिका लगातार अपने उत्कर्ष की ओर अग्रसर है। इस बार की पत्रिका में गोपाल कृष्ण जी द्वारा रचित "महिला सशक्तिकरण: सामाजिक उत्थान का प्रथम सोपान" तथा राजेन्द्र कुमार जी द्वारा रचित "एक यात्रा जंबुद्वीप से भारत तक" लेख बेहत ज्ञानवर्धक एवं प्रासंगिक है। इसके साथ ही भावपरक कविताओं ने पत्रिका की सुंदरता में चार चाँद लगा दिए हैं। विशेष तथ्य यह है कि पत्रिका में मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञानवर्धन का समान ध्यान रखा गया है। भविष्य में भी विभिन्न विषयों से सुसज्जित "अंकुर" की प्रतीक्षा रहेगी।

करमजीत सिंह
आंचलिक प्रबंधक, होशियारपुर

बैंक के संस्थापक



१९ औं दशकसुनु नो वो इउरि

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)



Punjab & Sind Bank
(A Govt. of India Undertaking)

जहाँ सेवा ही जीवन-ध्येय है

**आपके हर सपने को पूरा करने के लिए
हमारे पास ऋण हैं**



पीएसबी अपना घर

- आकर्षक ब्याज दरों पर घर के निर्माण या घर / फ्लैट / प्लॉट की खरीद के लिए जरूरत आधारित वित्त
- 40 वर्ष तक दीर्घकालिक पुनर्मुग्तान अवधि
- कोई पूर्व-मुग्तान प्रभार नहीं



पीएसबी बंधक ऋण

- सामान्य प्रयोजन हेतु क्रेडिट सुविधा
- ₹ 10 करोड़ तक अधिकतम क्रेडिट
- 10 वर्ष तक पुनर्मुग्तान अवधि



पीएसबी अपना वाहन

- आकर्षक ब्याज दरों पर जरूरत आधारित वित्त
- ड्राइट-मुक्त ऋण अनुमोदन
- 7 वर्ष तक पुनर्मुग्तान अवधि



पीएसबी व्यापार ऋण

- आकर्षक शर्तों पर व्यवसाय ऋण
- ₹ 10 करोड़ तक अधिकतम क्रेडिट सुविधा
- मियादी ऋण एवं ओवरड्राट सुविधा
- 10 वर्ष तक पुनर्मुग्तान अवधि



पीएसबी कंस्ट्रक्टर प्लस

- ठेकेदारों के लिए विशेष क्रेडिट सुविधा (निधिपोषित एवं गैर-निधिपोषित दोनों)
- सम्पत्ति के बसुली योग्य मूल्य के 80 प्रतिशत तक वित्त
- पूर्व-अनुमोदित मियादी ऋण के साथ जुड़ा हुआ



पीएसबी गोल्ड लोन

- आभूषण / रत्न के मूल्य के 75 प्रतिशत तक वित्त
- तुरंत ऋण अनुमोदन
- आकर्षक ब्याज दर

वित्तगत जानकारी के लिए अपनी ब्रजदीकी छाछा में संपर्क करें या 1800 419 8300 (ऑल इंडिया टोल फ्री) कॉल करें या वेबसाइट www.psbindia.com देखें।